
नेह के नाते
ममता कालिया

नेह के नाते

(सामरसेट मॉम के उपन्यास का संक्षिप्त रूपान्तरण)

रूपान्तरण
ममता कालिया

भारतीय ज्ञानपीठ

भूमिका

मानव मन के अनुपम चितेरे सॉमरसेट मॉम की सबसे प्रसिद्ध कृति 'ऑफ ह्यूमन बॉन्डेज' का प्रकाशन सबसे पहले सन् 1915 में हुआ था। तब से अब तक इस उपन्यास के अनेक संस्करण हो चुके हैं। यों तो सॉमरसेट मॉम ने नाटक, कहानियाँ, यात्रा-संस्मरण, निबन्ध, आलोचना और आत्मकथा भी लिखी, आज भी उनके पाठक और प्रशंसक उनके इस प्रारम्भिक उपन्यास से अपने को जुड़ा हुआ पाते हैं। इस उपन्यास की इतनी प्रसिद्धि का सबसे बड़ा कारण यह है कि इसका नायक फिलिप कैरी कोई श्रेष्ठ युवक नहीं वरन् एक मामूली इंसान की तरह गिरता पड़ता, गलती करता अपनी ज़िन्दगी की राह ढूँढ़ता है। कई पाठक इसे लेखक की आत्मकथा मानते हैं। ऑफ ह्यूमन बॉन्डेज आत्मकथा नहीं, आत्म-कथात्मक उपन्यास है जिसमें यथार्थ और कल्पना का अद्‌भुत मेल हुआ है। इसमें आयी घटनाएँ लेखक के जीवन की नहीं है, हाँ भावनाएँ हो सकती हैं। इस रचना का सबसे बड़ा आकर्षण है इसमें व्यक्त सहानुभूति और सच्चाई।

विलियम सॉमरसेट मॉम का जन्म सन् 1874 में हुआ था। शुरू के दस वर्ष वे पेरिस में रहे। उनकी शिक्षा केन्टरबरी के किंग्ज स्कूल और हेडिलबर्ग विश्वविद्यालय जर्मनी में हुई। लेखक ने डॉक्टरी अध्ययन भी कुछ वर्ष किया किन्तु बाद में वे पूरी तरह साहित्य-रचना में अपना समय बिताने लगे। मॉम का निधन सन् 1965 में हुआ।

मॉम की अन्य प्रसिद्ध रचनाएँ हैं—लीज़ा ऑफ लैम्बेथ, द मून ऐंड सिक्स पेन्स, द रेज़र्स एज, द समिंग अप इत्यादि।

— ममता कालिया

नेह के नाते

बड़े सवेरे से बादल घिरे थे। ऐसा लगता था बर्फ गिरेगी। एक सेविका बच्चे के कमरे में आयी और उसने खिड़की से पर्दा हटाया। बच्चा अभी सो रहा था।

''फिलिप, उठो'' उसने उनींदे फिलिप को गोदी में उठा लिया, ''तुम्हारी माँ तुमसे मिलना चाहती है।''

निचली मंजिल के एक कमरे में वह बच्चे को ले गयी। बिस्तर पर फिलिप की माँ लेटी थी। उसने बाँहें बढ़ाकर बेटे को थामा और उसकी आँखें चूमने लगी।

''निन्दी आ रही है?'' माँ ने पूछा।

फिलिप ने जवाब नहीं दिया, मुस्करा दिया। उसे इस नरम गरम बिस्तर में माँ के पास बहुत भला लग रहा था। अपने हाथ-पाँव सिकोड़ कर वह और भी नन्हा बन गया और एकदम पास सट गया। फिर उसे सुख की नींद आ गयी।

तभी डॉक्टर पास आकर खड़ा हो गया।

माँ कराह उठी, ''अभी इसे मत ले जाइए।''

डॉक्टर ने गम्भीरता से माँ को देखा और वह समझ गयी कि वह बच्चे को अपने पास और ज्यादा नहीं रोक सकेगी। उसने बच्चे की पूरी देह पर हाथ फेरा। जब उसका हाथ बच्चे के बायें पैर पर पहुँचा, वह रो पड़ी।

"क्या बात है? थकान आ रही है?" डॉक्टर ने पूछा।

माँ ने सिर हिलाया। वह रोती रही।

डॉक्टर ने बच्चे को उठाकर सेविका की गोद में दे दिया।

बच्चे के चले जाने के बाद माँ फूट-फूट कर रो दी।

डॉक्टर कमरे में पड़ी मेज के पास गया। मेज पर तौलिए से ढका एक नवजात शिशु का शव था। डॉक्टर ने तौलिया हटा कर देखा। यों बिस्तर और मेज के बीच पर्दा था किन्तु माँ को जैसे अपने आप पता चल गया।

"लड़का था या लड़की?" उसने नर्स से पूछा।

"लड़का।"

इस बीच फिलिप की सेविका लौट आयी थी।

"फिलहाल इस वक्त कुछ किया नहीं जा सकता" डॉक्टर ने चलते हुए कहा।

सेविका डॉक्टर के साथ-साथ बड़े कमरे तक आयी।

"तुमने मिसेज कैरी के जेठ को चिट्ठी लिख दी है?"

"जी।"

"मेरा ख्याल है बच्चे को यहाँ से कहीं भेज देना चाहिए।"

"फिलिप की धर्म-माँ मिस वाटकिन ने कहा है वे उसे अपने साथ ले जाएँगी। डॉक्टर, मिसेज कैरी ठीक तो हो जाएँगी?"

डॉक्टर ने सिर हिला दिया।

एक हफ्ते बाद की बात है फिलिप मिस वाटकिन की बैठक में फर्श पर बैठा खेल रहा था। वह अकेले खेलने का अभ्यस्त था। उसने सोफे की गद्दियाँ उठा कर उनके पीछे छुपा-छुपी खेल शुरू किया था। तभी किसी ने कुर्सी हटा कर गद्दियाँ गिरा दीं। यह उसकी पुरानी सेविका एम्मा थी।

एम्मा ने उसे चूमा, फिर वह गद्दियाँ जगह पर रखने लगी।

"मुझे घर ले चलोगी?"

"हाँ, तुम्हें लेने ही तो आयी हूँ।"

''तुमने नये कपड़े पहने हैं।''

एम्मा ने काला गाउन पहन रखा था और काली टोपी। वह ठिठक गयी। उसने जिस सवाल की उम्मीद की थी, फिलिप ने वह नहीं पूछा।

''क्या तुम यह नहीं पूछोगे कि तुम्हारी माँ कैसी हैं?''

''अरे मैं भूल ही गया! कैसी हैं माँ?''

''माँ बिल्कुल मजे में हैं।''

''यह तो बढ़िया है।''

''तुम्हारी माँ अब चली गयी हैं। तुम अब कभी उनसे मिल नहीं पाओगे।''

''क्यों?''

''क्योंकि वह भगवान के पास हैं।''

एम्मा रोने लगी। फिलिप भली-भाँति कुछ समझा नहीं पर वह भी रोने लगा। एम्मा एक लम्बी-चौड़ी औरत थी और उसके लहजे से पता चलता था कि वह डेवनशायर की है। उसने बच्चे को छाती से चिपका लिया। उसे इस बे-माँ-बाप के बच्चे पर बहुत प्यार उमड़ा। इस बच्चे को अब उसे अनजाने हाथों में सौंपना था।

''तुम्हारे ताऊजी विलियम घर पर तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं। जाकर मिस वाटकिन को नमस्ते कर आओ तो चलें।''

''मैं नमस्ते नहीं करना चाहता।'' बच्चे के मुँह से निकला।

''अच्छा फिर ऊपर से अपनी टोपी ले आओ।''

जब वह टोपी लेकर आया हॉल के बगल वाले कमरे से बातचीत की आवाजें आ रही थीं। मिस वाटकिन, उनकी बहन और कुछ सहेलियाँ गपशप में मगन थीं।

फिलिप नौ वर्ष का था। उसे लगा वह अन्दर जाएगा तो वे सब उस पर तरस दिखाएँगी। फिर भी जाना तो पड़ेगा।

''बेचारा, च् च् च्।'' मिस वाटकिन ने अपनी बाँहें फैलायीं। वह रोने लगी।

फिलिप की समझ में अब आया कि उसने काले कपड़े क्यों पहन

रखे थे।

सबसे विदा लेकर फिलिप सीढ़ियों पर खड़ा होकर एम्मा की प्रतीक्षा करने लगा। अन्दर के कमरे से आवाजें अभी भी आ रही थीं।

"बेचारा फिलिप बिल्कुल अनाथ और अकेला रह गया, ऊपर से लँगड़ा।"

"अरे हाँ, मैंने देखा उसका बायाँ पैर बेकार है।"

"इसकी माँ यह पैर देखकर बड़ी कलपती थी।"

एम्मा के आने पर वे गाड़ी में चल दिये।

जब वे घर पहुँचे, बैठक में ताऊजी बैठे चिट्ठियाँ लिख रहे थे।

"फिलिप आ गया है।" एम्मा ने कहा।

मिस्टर कैरी ने फिलिप से हाथ मिलाया। फिर कुछ सोच कर उन्होंने झुक कर उसे चूम लिया। वे नाटे मोटे और गंजे से आदमी थे और उनकी घड़ी की चेन में एक सुनहरा क्रास लटक रहा था।

"अब तुम्हें हमारे साथ रहना होगा फिलिप, ठीक है न!"

दो साल पहले फिलिप इनके घर गया था लेकिन उसे वहाँ के बगीचे और अटारी की तो याद थी, ताऊ-ताई की नहीं।

"ठीक है।" फिलिप ने कहा।

"अब मैं और लुइजा ताई ही तुम्हारे माँ-बाप हैं, तुम्हारी माँ तुम्हें मेरे सुपुर्द कर गयी है।"

फिलिप का चेहरा थरथरा कर लाल हो गया, उसने कुछ नहीं कहा।

मिस्टर कैरी पचास के थे और उनकी शादी को तीस बरस हो चुके थे। पर वे निस्संतान थे। जब उन्हें अपने छोटे भाई की पत्नी की खबर मिली, लन्दन आते हुए सारे रास्ते वे यही सोचते आये कि इस मृत्यु से उनका अपना जीवन काफी जंजाल में पड़ जाएगा। फिलिप की माँ को तो उन्होंने कभी भी पसन्द नहीं किया। कहीं यह बच्चा ऊधमी हुआ तब तो खैर नहीं।

"कल हम लोग ब्लैकस्टेबल चलेंगे।" उन्होंने कहा।

"एम्मा भी चलेगी?"

"नहीं।"

"क्यों?"

"इसकी तनखा कहाँ से देंगे। तुम्हारे पिताजी तो कुछ छोड़ कर नहीं गये। अब तो एक-एक पैसे का ध्यान रखना होगा।"

फिलिप के पिता एक कामयाब डॉक्टर थे, उन्होंने खूब कमाया और खूब खर्च किया। छह महीने पहले यकायक वे रक्तदूषण के प्रकोप से चल बसे। फिलिप की माँ रुपये-पैसे के मामले में पति से भी ज्यादा कोरी थी और जो भी जमापूँजी थी वह जल्द ही साफ हो गयी। अब फिलिप के वयस्क होने तक के लिए सिर्फ दो हजार पौंड की रकम ही शेष बची थी। ये सब बातें फिलिप को समझाना कठिन था।

"कल चलना जरूरी है क्योंकि शनिवार को मैं अपना उपदेश तैयार किया करता हूँ। एम्मा से कहो तुम्हारे जाने की तैयारी कर दे। यहाँ का सारा सामान बिकने जा रहा है। हाँ, तुम माँ और पिताजी के सामान में से एक-आध चीज यादगार की तरह ले सकते हो।"

फिलिप माँ के कमरे में बड़ी देर तक देखता रहा कि कौन-सी चीज यादगार के तौर पर ले। उसे याद आया कि माँ को वह घड़ी पसन्द थी। उसने घड़ी उठा ली। फिर वह माँ के ऊपर वाले कमरे में गया। आलमारी माँ के कपड़ों से भरी हुई थी। फिलिप ने वे कपड़े अपनी बाँहों में भर लिये। उनमें अभी तक माँ का स्पर्श और गन्ध थी। फिलिप को लगा माँ सिर्फ कहीं घूमने चली गयी हैं, अभी वे आएँगी और फिलिप के खिलौनों में चाय पिएँगी। फिर वह बिस्तर में तकिये पर सिर रखकर लेट गया।

•

ब्लैकस्टेबल लन्दन से साठ मील दूर था। वहाँ पहुँच कर विलियम कैरी ने सामान कुली के हवाले कर दिया और फिलिप के साथ पैदल घर की ओर चल पड़ा। मुश्किल से पाँच मिनट का रास्ता था। फाटक देखकर फिलिप को सहसा याद आया कैसे वह इस फाटक पर झूला

करता था हालाँकि ताऊजी को यह सब नापसन्द था। बड़ा फाटक कभी-कभी मेहमानों के लिए खोला जाता था। घर के लोग, साधु, फकीर, माली और दूसरे लोगों के लिए बगल में छोटा दरवाजा था। यह पीले रंग का मकान था जिसकी खपरैलें लाल थीं। देखने से वाकई यह पादरी का घर लगता था। सामने का दरवाजा गिरजाघर की ड्योढ़ी जैसा था और बैठक में मेहराबदार खिड़कियाँ थीं।

"वह तुम्हारी ताई है, भाग कर उनके पास जाओ फिलिप।"

फिलिप ने दौड़ने की कोशिश की पर रुक गया। मिसेज कैरी दुबली-पतली सूखी सी स्त्री थी। उसकी आँखें नीली थीं पर उसके सारे चेहरे पर झुर्रियाँ थीं। उसने काली पोशाक पहनी हुई थी और गले में सोने की जंजीर जिसमें क्रॉस लटक रहा था। उसकी आवाज में नरमी थी।

"पैदल आ रहे हो विलियम?"

"मैंने सोचा ही नहीं कि..." विलियम ने भतीजे के पैर की तरफ देखा।

"तुम्हें तकलीफ हुई होगी फिलिप" ताई ने कहा।

"नहीं, मैं हमेशा पैदल चलता हूँ।"

लुइजा ने फिलिप को ऊपर ले जाकर एक छोटा-सा कमरा दिखाया। कमरे की खिड़की से एक पेड़ दिख रहा था और फाटक तक जाने वाला रास्ता।

"नन्हे बच्चे का नन्हा कमरा।" ताई ने कहा, "तुम्हें अकेले सोने में डर तो नहीं लगेगा?"

"बिल्कुल नहीं।"

"तुम हाथ-मुँह खुद धो लोगे या मैं धोऊँ?"

"मैं धो लूँगा।" फिलिप ने आत्मविश्वास से कहा।

"फिर नीचे चाय पीने आ जाना। मैं तुम्हारे हाथ-पैर देखूँगी।"

भोजन-कक्ष खूब विशाल था और उसमें दोनों तरफ कई खिड़कियाँ थीं। एक तरफ हारमोनियम रखा था, दूसरी तरफ कमरा गर्म करने की

अँगीठी। बीचों बीच एक बड़ी मेज थी। अँगीठी के दो तरफ दो कुर्सियाँ थीं। एक कुर्सी हत्थेदार और बड़ी थी। उसका नाम था 'पति'। दूसरी कुर्सी छोटी और बिना हत्थों की थी, उसका नाम था 'पत्नी।' मिसेज कैरी का कहना था उन्हें ज्यादा आराम से बैठना पसन्द नहीं क्योंकि उन्हें हजारों काम करने होते हैं।

"अब चाय में क्या देर है।" विलियम ने पत्नी से पूछा।

"मैंने मैरी एन से कहा तुम्हारे लिए अंडा बना दे। सफर से आकर तुम्हें भूख लगी होगी।"

मिसेज कैरी को लगता था कि लन्दन से ब्लैकस्टेबल आना एक लम्बा सफर है। वह खुद कम ही बाहर निकलती थी। इतना पैसा ही पास नहीं था। सिर्फ तीन सौ पौंड वार्षिक आमदनी थी। जब भी छुट्टी पड़ती, पैसे की कमी के कारण विलियम अकेला बाहर जाता। मैरी एन अंडा लेकर आयी। वे तीनों चाय के लिए बैठ गये।

फिलिप की कुर्सी बहुत नीची पड़ रही थी। यह देखकर एक पल को मिस्टर और मिसेज कैरी उलझन में पड़ गये।

मैरी एन ने कहा, "कुछ किताबें रख दूँ कुर्सी पर।"

उसने हारमोनियम के ऊपर से बड़ी-सी बाइबिल और प्रार्थना-पुस्तक उठायी और फिलिप की कुर्सी पर रख दीं।

"ओह विलियम, फिलिप बाइबिल पर कैसे बैठ सकता है?" लुइजा ने हैरानी से कहा।

विलियम ने एक पल रुक कर सोचा।

"कोई हर्ज नहीं। मैरी एन, तुम प्रार्थना-पुस्तक को बाइबिल के ऊपर रख दो। प्रार्थना वाली किताब हम जैसे लोगों की लिखी हुई है।" विलियम ने कहा।

"यह तो मैंने सोचा ही नहीं।" लुइजा ने कहा।

पादरी विलियम कैरी ने प्रार्थना में शीश झुकाया और फिर अंडा तोड़ा।

"यह लो फिलिप, यह ऊपरी हिस्सा तुम्हारा।"

फिलिप पूरा अंडा खा सकता था पर उसे दिया ही नहीं गया। उसने ऊपरी हिस्सा ले लिया।

"मुर्गियों का क्या हाल है?" पादरी ने पूछा।

"पूछो मत। मुश्किल से एक दो अंडे निकल रहे हैं।"

"फिलिप, अंडा कैसा लगा?"

"बहुत अच्छा, धन्यवाद।"

"अगले इतवार को फिर मिलेगा।"

मिस्टर कैरी इतवार को चाय के साथ अंडा जरूर खाते थे ताकि शाम के धर्मोपदेश के लिए उनमें ताकत आ जाये।

अभी फिलिप को ताऊजी के घर आये एक ही हफ्ता हुआ था कि लन्दन वाले घर से उसके लिए डाक आयी। डाक में एक छोटी-सी पार्सल थी जिसमें फिलिप की दिवंगत माँ के बारह फोटोग्राफ थे। इन चित्रों में मिसेज कैरी दुबली, थकी लेकिन सुन्दर लग रही थी।

विलियम कैरी ने फिलिप को बुलाया, "तुम्हें कुछ पता है ये कहाँ से आयीं?"

"मुझे याद पड़ता है, माँ एक दिन कह रही थीं उनकी तस्वीरें खिंची हैं। मिस वाटकिन ने उन्हें डाँटा भी था। पर माँ ने कहा था—मैं चाहती हूँ जब फिलिप बड़ा हो तो मुझे कम से कम इन तस्वीरों के सहारे याद तो कर ले।"

"अच्छा तुम एक चित्र ले सकते हो, बाकी मैं उठाकर रख दूँगा।"

विलियम कैरी ने एक चित्र मिस वाटकिन को भेजा जिसने उत्तर में पूरा ब्योरा लिख भेजा कि कैसे एक दिन फिलिप की माँ को चित्र खिंचाने की अदम्य चाह उठी और किसी तरह वह फोटोग्राफर तक चली गयी। हालाँकि इसके बाद वह इतनी थक गयी कि बस शैया से लग गयी।

"पर इतनी तस्वीरों की क्या जरूरत थी, एक दो से भी काम चल

सकता था'' मिस्टर कैरी बुड़बुड़ाये।

यों तो ब्लैकस्टेबल में सभी दिन सपाट और घटनाहीन होते थे, रविवार को थोड़ी चहल-पहल रहती थी। मिस्टर कैरी को इस बात का घमंड था कि वे सप्ताह के सातों दिन काम में व्यस्त रहते हैं।

पादरी विलियम कैरी के घर में रविवार को सबको रोज़ की अपेक्षा आध घंटा पहले जागना पड़ता। मिसेज कैरी को तैयार होते-होते सुबह के नौ बज जाते। रविवार की नाश्ता के समय की प्रार्थना और दिनों से लम्बी होती। नाश्ते के बाद पादरी डबल-रोटी के टुकड़े काटते। फिलिप उन टुकड़ों के किनारे छीलता। फिर वे एक पेपरवेट से रोटी को इतना दबाते कि वह एकदम चपटी हो जाती। अब इसके छोटे-छोटे चौकोर टुकड़े बनाए जाते। यह काम कम्यूनियन की तैयारी का अंग था।

ठीक दस बजे गाड़ी आ जाती और वे सब उसमें सवार हो कर गिरजाघर जाते। पादरी चाहते थे कि इतवार को उनकी पत्नी हमेशा काले कपड़े पहने, उन्हें रंगों से चिढ़ थी। यहाँ तक कि वे पत्नी के बालों में गुलाब भी बर्दाश्त नहीं करते थे। जैसे ही वे चलने को हुए मिसेज कैरी को याद आया कि पति को आज अंडा तो दिया ही नहीं। मैरी एन को डाँट पड़ी। जब वह अंडा लायी, पास रखे शराब के ग्लास में उसे फेंटकर पेश किया गया। पादरी कैरी ने एक घूँट में पी लिया।

आख्यान के बीच फिलिप ऊबने लगा तो ताई ने उसकी बाँह दबा दी। फिर जब भजन गाए जाने लगे तो फिलिप का ध्यान बँट गया। फिर सबने कम्युनियन की तश्तरी में सिक्के छोड़े और लोग अपने-अपने घर चले गये।

गाड़ी आते ही पादरी परिवार भी रवाना हो गया। घर पहुँचकर सबने खाना खाया, आराम किया। शाम की चाय में पादरी विलियम ने फिर एक अंडा खाया क्योंकि उन्हें शाम को फिर गिरजाघर जाना था। इस बार मैरी एन चर्च गयी, मिसेज कैरी घर में रहीं। शाम को मिस्टर कैरी पैदल गिरजाघर गये। उनके साथ लँगड़ाते हुए फिलिप भी गया। कभी-कभी वह उनका हाथ पकड़ लेता।

रात के भोजन के बाद फिलिप इतना थक गया कि उसने बिना ना-नुकर के मैरी एन को अपना सारा काम करने दिया। वे दोनों एक-दूसरे से प्यार करते थे।

मैरी एन एक मछुआरे की लड़की थी। जब वह अठारह वर्ष की थी तब इस गिरजे की बस्ती में आयी थी। तभी से वह पादरी के घर काम कर रही थी। अब उसकी उम्र पैंतीस वर्ष थी। वह मोटी और ठिगनी थी। फिलिप की उससे अच्छी पटती थी। लेकिन ताऊ-ताई को सन्तुष्ट करना इतना सरल न था।

एक दिन फिलिप ईटों का घर बना कर खेल रहा था। खड़का होने से ताऊजी की नींद खुल गयी। उन्होंने फिलिप को खूब डाँटा। बाद में ताई ने भी उसे शर्मिन्दा किया और कहा कि वह ताऊजी से माफी माँगे।

न जाने वह कौन-सी शक्ति थी जिसकी वजह से फिलिप ने माफी नहीं माँगी। वह चुपचाप चाय पीते हुए बैठा रहा।

पादरी परिवार के लिए यह बड़ा खेदजनक था। उस शाम ताऊजी फिलिप को अपने साथ गिरजाघर भी नहीं ले गये। फिलिप को बड़ा अपमान महसूस हुआ।

विलियम कैरी के गिरजे चले जाने के पश्चात् मिसेज कैरी ने कहा—

''चलो फिलिप, अच्छे बच्चे की तरह तुम मेरे साथ बाइबिल पढ़ो।''

''नहीं, मैं नहीं पढ़ूँगा।'' फिलिप ने कहा।

''तो फिर तुम क्या करोगे!''

''मुझे अकेला छोड़ दीजिए।''

''तुम इतनी खराब बात कैसे कह सकते हो फिलिप। तुम जानते हो कि तुम्हारे ताऊ और मैं तुम्हारा कितना भला सोचते हैं। क्या तुम मुझे प्यार नहीं करते?''

''बिल्कुल नहीं। मैं आपसे नफ़रत करता हूँ। आप मर जायें तो अच्छा हो।''

मिसेज कैरी के मुँह से चीख निकली और वे अपने पति की आरामकुर्सी में धम्म से बैठ गयीं। वह निःसंतान स्त्री थीं। हालाँकि इसे वह भगवान

की इच्छा मान चुकी थी फिर भी कई बार छोटे बच्चों को खेलते-कूदते देख उनके हृदय में हूक उठा करती। उसके गालों पर आँसू ढुलक पड़े।

अब फिलिप को महसूस हुआ कि ताई उसकी बात से आहत होकर रो रही थी। उसने पास जाकर माफी माँगी। ताई ने अपनी दुबली बाँहों से उसे घेर लिया और उन दोनों के बीच की दीवार उस दिन टूट गयी। ताई को उस पर बिल्कुल नये सिरे से प्यार आया।

कैरी दम्पती ने टरकनबरी के किंग्ज स्कूल में फिलिप का दाखिला करवा दिया। सभी पादरियों के बच्चे यहाँ पढ़ते थे और पढ़ लिखकर बड़े होकर पादरी बन जाते थे। इस स्कूल के चारों ओर ऊँची चारदीवारी थी जिससे यह जेल जैसा मालूम पड़ता। प्रिंसिपल मिस्टर वाटसन छह फुट से भी ज्यादा लम्बे-तगड़े खुश-मिजाज़ आदमी थे। उन्होंने फिलिप को स्कूल भवन का एक चक्कर लगवाया, फिर उसे खेल के मैदान में छोड़कर चले गये। थोड़ी देर में मैदान बच्चों से भर गया। मिस्टर वाटसन ने एक बच्चे को बुलाया, 'हैलो वैनिंग, यह देखो तुम्हारा नया दोस्त।' यह कहकर वे चले गये। बच्चों ने पहचान बढ़ायी।

"तुम्हारा क्या नाम है?"

"कैरी।"

"तुम्हारे पापा कहाँ हैं?"

"नहीं हैं।"

"ओह! तब तो तुम्हारी माँ कपड़े धोती होंगी।"

"नहीं, वे भी भगवान के पास चली गयी।"

तभी वैनिंग की नज़र फिलिप के पाँव पर पड़ी।

"यह तुम्हारे पैर को क्या हुआ है?"

फिलिप ने पैर सिकोड़ा और अपने साबुत पैर के पीछे छुपाने की कोशिश की,

"यह पैर ऐसा ही है।"

"देखें?"

"नहीं।"

वैनिंग ने फिलिप को एक लात मारी कि फिलिप तड़प गया। उसे यह नहीं सूझा कि वह भी एक लगा दे। शायद फिलिप को ख्याल था कि अपने से छोटों को मारना बुरा होता है।

अभी फिलिप अपनी चोट सहला ही रहा था कि लड़कों की एक पूरी टोली वैनिंग के साथ आकर फिलिप का लँगड़ा पाँव देखने लगी। फिलिप ने बड़ी मुश्किल से अपने आँसू रोके। यही किस्सा शाम को होस्टल में हुआ। दिन भर के रोके हुए आँसू रात भर फिलिप का तकिया भिगोते रहे। उसे बड़ी जोर से माँ की नरम गरमाहट याद आयी। फिर एम्मा का भी ध्यान आया। रोते-रोते उसकी आँख लग गयी। स्कूल में पिछले दो दिन काफी यन्त्रणा में बीते थे।

स्कूल में लड़कों के बीच यकायक कोई खेल या बात ज़ोर पकड़ लेती और कुछ दिन बाद समाप्त हो जाती। ऐसे ही दौर में एक बार धार्मिकता की लहर ने ज़ोर मारा। लड़कों ने आपस में गाली-गलौज, मार-पीट, तोड़-फोड़ एकदम बन्द कर दी। सबका ज्यादा समय बाइबिल पढ़ने और चर्च में जाने में बीतने लगा। फिलिप ने एक बाइबिल सभा की सदस्यता ले ली जहाँ से उसे बाइबिल सम्बन्धी कैलेण्डर मिला। फिलिप रोज शाम को इस कैलेण्डर में दिये उपदेश पढ़ता और उन पर चिन्तन करता। एक रात उसने कैलेण्डर में ईसा मसीह के ये शब्द पढ़े : "अगर तुम्हारे अन्दर आस्था है तो तुम यदि कहो कि पर्वत अपनी जगह से सरक कर समुद्र में गिर जाये तो वह जरूर गिर जाएगा। इस ताकत को विकसित करने के लिए जरूरी है कि तुम प्रभु में ध्यान लगाओ।"

फिलिप छुट्टियों में जब घर गया, रोज रात सोने से पहले वह घुटने टेक कर ईश्वर से प्रार्थना करता, "हे भगवान मेरा यह लँगड़ा पैर, स्कूल खुलने से पहले ठीक कर दो।"

मन ही मन वह कल्पना करता कि पैर अच्छा होने पर वह तीन-तीन सीढ़ियाँ फलांद कर उतर रहा है, ताई उसके लिए नये जूते खरीद

कर ला रही है। और सबसे बड़ी बात स्कूल में सब हक्के-बक्के उसके दोनों स्वस्थ पैरों को देख रहे हैं।

सर्दियों में फिलिप का कमरा बेहद ठंडा और तकलीफदेह रहता। फिलिप को लगा वह जितनी तकलीफ सह कर ईश्वर से प्रार्थना करेगा, उतना ही उसकी प्रार्थना का असर होगा। पहले उसने घुटनों के नीचे से दरी हटायी, फिर अपनी कमीज़ उतार दी। अगले दिन छुट्टियाँ खत्म होने जा रही थीं और फिलिप को विश्वास था कि उसके साथ करिश्मा ज़रूर होगा। सुबह जब मैरी एन उसके कमरे में आयी, वह उठा लेकिन चुप रहा। सबसे पहले चादर के अन्दर हाथ डालकर उसने अपना पैर छुआ। पैर वैसा का वैसा था, नाटा, मोटा, विकृत। फिलिप लँगड़ाता हुआ नीचे उतरा और ताऊ-ताई से बोला, "यह बताइए, अगर मैं भगवान को कोई काम बताऊँ और वह उसे न करे, जैसे मान लो, पर्वत हिलाने का, तो इसका क्या मतलब है।"

"कितना अजीब लड़का है!" ताई बोलीं।

"इसका मतलब है कि तुम्हारे अन्दर आस्था की कमी है।" विलियम कैरी ने कहा।

फिलिप को लगा यही वजह रही होगी कि उसका लँगड़ा पैर ठीक नहीं हुआ। उसने तय किया अब वह और भी ध्यान से प्रार्थना किया करेगा और भगवान को ईस्टर तक का समय देगा। लेकिन ईस्टर आते-आते फिलिप हताश हो गया। उसे लगा ताऊजी ने उसे इस धार्मिक स्कूल में डाल कर अच्छा नहीं किया जहाँ धार्मिक उपदेशों में कोई असलियत नहीं होती।

इसी तरह आस्था और अनास्था के बीच फिलिप ने स्कूल में दो साल बिता लिये। इस दौरान प्राचार्य भी बदल गये। नये प्राचार्य ने एक दिन फिलिप को सुझाव दिया, "तुम चर्च की सेवा और प्रचार में क्यों नहीं लग जाते!"

"मेरे ताऊजी भी यही चाहते हैं।"

"फिर?"

फिलिप चुप रहा।

मिस्टर परकिंस ने कहा, ''और फिर ज्यादा भाग-दौड़ वाला कोई काम तो तुम कर भी नहीं सकते।''

फिलिप का चेहरा लाल हो गया।

''तुम अपने पैर के बारे में जरूरत से ज्यादा सोचते हो। इसके लिए तुम्हें ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए।''

फिलिप के होठ भिंच गये। उसे याद आया कैसे उसने महीनों ईश्वर से निष्फल प्रार्थना की थी।

''जब तक तुम अपनी लाचारी के बारे में बागी होकर सोचोगे, तुम्हें अपने पर शर्म आती रहेगी। तुम यह क्यों नहीं सोचते कि ईश्वर ने तुम्हें यह सलीब उठाने और ढोने के लिए इसलिए चुना है क्योंकि तुममें इतनी सामर्थ्य है?''

बाद में फिलिप ने इन शब्दों पर ध्यान दिया तो उसका हृदय एक आध्यात्मिक संतोष से भर उठा। उसने तय कर लिया कि वह पादरी ही बनेगा। जब वह लँगड़ाता हुआ, चर्च तक चल कर जाएगा, हो सकता है लोग उसे देखकर हँसें पर वह सहर्ष उस शर्मिन्दगी को झेल लेगा क्योंकि उसकी यह लाचारी ईश्वर के चरणों में अर्पित निर्माल्य है।

यह सब तय करने के बावजूद फिलिप बहुत देर टरकेनबरी स्कूल में न रह सका। फिलिप बेहद संवेदनशील और भावुक किस्म का लड़का था। एक नये दोस्त रोज़ के दुर्व्यवहार के कारण उसका दिल इस स्कूल से फट गया। उसने अपने ताऊ-ताई से जिद करके जैसे-तैसे अपने को इस यातना-गृह से मुक्त किया। लेकिन जिस दिन उसे वाकई वहाँ से मुक्ति मिली उसका मन भारी हो गया। उसे लगा, उसने व्यर्थ यहाँ से हट कर जर्मनी जाने का निश्चय किया। ऐसा उसके साथ अक्सर होता। उसे कभी अपने आप से सन्तोष न होता।

मिस्टर कैरी की एक पुरानी परिचित मिस विल्किसन बर्लिन में रहती

थी। मिसेज कैरी ने उसे पत्र डालकर सलाह माँगी कि उनका भतीजा जर्मनी में रहकर पढ़ना चाहता है। मिस विल्किसन ने उत्तर दिया कि सबसे पहले उसे हैडिलबर्ग में रहकर जर्मन भाषा सीखनी होगी।

लिहाजा मई की एक सुबह फिलिप हैडिलबर्ग पहुँच गया। उसे प्रोफेसर इरलिन के घर में रहकर पढ़ाई करनी थी।

वह सामान से लदा फँदा प्रोफेसर इरलिन के यहाँ पहुँचा। इरलिन नाटी, मोटी, चुकन्दर जैसे चेहरे और छोटी-छोटी आँखों वाली औरत थी। उसकी दो लड़कियाँ थीं, बड़ी का नाम थेक्ला और छोटी का अन्ना था।

फिलिप की तरह इरलिन के सोलह और विद्यार्थी थे। ये देश-विदेश से आये थे और इकट्ठे फ्रा इरलिन के मकान में रहते थे। इनमें लड़के भी थे और लड़कियाँ भी।

यहाँ अपेक्षाकृत अधिक आज़ादी थी। कभी भी आप घूमने जा सकते थे, और कभी भी सोने। इसलिए यहाँ छोटी-छोटी बातों पर झूठ बोलने की जरूरत नहीं थी। प्रोफेसर इरलिन फिलिप को लेटिन और जर्मन पढ़ा रही थीं, एक फ्रांसीसी टीचर उसे फ्रेंच पढ़ाने लगा। गणित का ज्ञान वार्टन नाम का एक ब्रितानी अध्यापक अपने घर पर फिलिप को बुलाकर कराता था।

वार्टन का कमरा गन्दा, बियर की बोतलों से भरा रहता था। उसे विश्वविद्यालय में पढ़ाने से नफ़रत थी। वह खुल्लम-खुल्ला कहता था कि वह केवल अपनी दाल-रोटी की फिक्र में ट्यूशन करता है। फिलिप से वह महीने की जगह हफ्ता-हफ्ता पैसे लेता।

शाम के समय वे सब अक्सर घूमने जाते। फिलिप को एक जर्मन लड़की फ्रॉलीन हेडविग बड़ी अच्छी लगती थी। वह रात में एक गाना सुनाती थी : ''इश लेबे डिश'' अर्थात् मैं तुम्हें प्यार करती हूँ।

एक दिन जब बैठक में सब लोग इकट्ठे हुए, फिलिप ने उस लड़की से कहा, ''इश लेबे डिश।'' उसका मतलब था यह गीत सुना दो।

''तुम्हें मुझसे प्रथम पुरुष में बात नहीं करनी चाहिए।'' हेडविग

मिस विल्किसन ने उसे बताया कि वह पेरिस में भी रही हैं और वहाँ मोपासां से भी उनका परिचय रहा।

"ओह क्या आदमी था वह पर कितना बढ़िया लेखक!"

"क्या वह तुमसे प्यार करता था?" फिलिप ने पूछा।

"लो बोलो, अरे वह तो हर औरत से प्यार करता था। कितना प्यारा आदमी था!"

मिस विल्किंसन पेरिस की यादों में डूब गयीं। बोलीं, "मैडम फोयो का दर्जी हमेशा मेरे कान में फुसफुसाता था—"काश मैडम के पास आप जैसी देहयष्टि होती!"

फिलिप ने ध्यान दिया, मिस विल्किंसन को अपने दोहरे बदन पर काफी नाज था।

"इंग्लैंड के लोग तो मूर्ख हैं। वे केवल चेहरा देखते हैं। पेरिस के फ्रांसीसी जानते हैं कि फिगर ज्यादा महत्त्वपूर्ण चीज है।"

फिलिप ने इतनी खुल कर किसी महिला से कभी बातचीत नहीं की थी।

मिस विल्किंसन ने कहा, 'अगर मिसेज़ कैरी को पता चल गया कि हम लोग क्या बात कर रहे हैं तो?'

"मैं तो नहीं बताऊँगा।" फिलिप ने कहा।

"मैं भी नहीं, वादा।"

फिर मिस विल्किंसन ने अपने दूसरे प्रेम-प्रसंग की बात बतानी शुरू कर दी। पेरिस का एक चित्रकार उन पर मरता था। वह घंटों उनके घर की सीढ़ियों पर खड़ा रहता, सिर्फ एक झलक के लिए। वह उन्हें रोज़ प्रेमपत्र लिख कर भेजता। एक दिन रात में वह आ गया, सीधे अन्दर घर में घुस आया।'

"फिर क्या हुआ?" फिलिप ने पूछा। उत्कंठा के मारे उसका बुरा हाल था।

"बस कहानी यहीं खत्म होती है।" कह कर मिस विल्किंसन खिलखिला दी।

''क्या वह सुन्दर था?''

''बेहद?''

''तुम उसे अभी भी जानती हो।''

''नहीं, वह निष्ठुर था। तुम सभी पुरुष एक से होते हो।''

ये सारी बातें फिलिप के दिल-दिमाग़ में समा गई। अनेक फ्रेंच उपन्यास पढ़ने के कारण यह तो वह समझ गया कि मिस विल्किंसन आख़िर क्या चाहती हैं पर वह अभी भी इस धक्के से नहीं उबर पाया था कि आख़िरकार वह पादरी की अविवाहित बेटी थी। उसे यह भी शर्म आई कि उसके पास सुनाने को एक भी किस्सा नहीं है। मिस विल्किंसन इतनी चतुर है कि उससे झूठ भी नहीं बोला जा सकता।

मिस विल्किंसन प्यानो बहुत अच्छा बजाती थी। उन्होंने फिलिप को भी सिखाना शुरू कर दिया। ताऊ-ताई को ज़्यादा चिन्ता इस बात की थी कि फिलिप किसी धन्धे से लग जाय। लुइज़ा के ख्याल से आदमियों के योग्य सिर्फ चार धन्धे थे, थल सेना, जल सेना, वकालत या पादरी बनना। उसका देवर डॉक्टर था इसलिए उसने फिलिप से पूछा क्या वह डॉक्टर बनेगा।

''फिर तुम क्या करोगे?''

''अरे अभी यह सब तय करने को एक महीना पड़ा है।''

मिस विल्किंसन ने कहा, ''हाँ एक महीने बाद तुम तो फिर आज़ाद होकर निकल पड़ोगे, मुझे वापस अपनी घुटन भरी नौकरी में जाना होगा। पता नहीं हम कभी बाद में मिलेंगे या नहीं।''

''क्यों नहीं!''

''क्या कारोबारी ढंग से 'क्यों नहीं' कह रहे हो?''

फिलिप का चेहरा लाल हो गया। उसे लगा मिस विल्किंसन उसे बेवकूफ़ मानती है। आखिर तो वह एक नवयुवती थी, कभी-कभी सुन्दर भी लगती थी और वह खुद बीस का होने को था। उसे मिस विल्किंसन के सामने प्रेम-प्रस्ताव रखना ही चाहिए। पर उसे तो प्रेम की पद्धति की भी जानकारी नहीं थी। कई बार अकेले में बैठ वह सोचता रहता—

वह मिस विल्किसन से यह कहेगा, वह कहेगा पर जब वह सामने पड़ती तो सारी बातें नदारद हो जातीं। एक अड़चन यह थी कि हर बार फिलिप को उसकी उम्र याद आ जाती, फिर प्रेम-प्रस्ताव रखना ज़रा मुश्किल हो जाता। फिर भी एक शाम काफी देर टेनिस खेलने के बाद, लॉन पर एकान्त में अवसर पाकर फिलिप ने मिस विल्किसन को बाँहों में लेकर चूम लिया। उसे हैरानी हुई कि इतना स्वाभाविक और आसान काम उससे पहले क्यों नहीं बन पड़ा। फिर तो उसने चुम्बनों की झड़ी ही लगा दी।

दूसरी हैरानी यह थी कि जो प्रेम भरी बातें फिलिप रात के अँधेरे में कह लेता था, दिन के उजाले में कहने की हिम्मत उसमें नहीं थी। कुछ अतिरंजित तो होती ही थीं वे बातें। मिस विल्किसन लगातार उसकी तारीफ करती—

''तुम्हारा प्रेम करने का तरीका बेहद सुन्दर, कोमल और काव्यात्मक है।''

फिलिप फूल कर कुप्पा हो जाता। उसकी इच्छा होती किसी के सामने शेखी मारे लेकिन इस प्रेम-प्रसंग की जानकारी किसी को नहीं थी।

लेकिन इस रिश्ते में उम्र का फासला फिलिप को जब तब खटकता। मिस विल्किसन का आग्रह था फिलिप उसे एमिली पुकारा करे। पर फिलिप को एमिली नाम से अपनी एक चाची का ध्यान आता। मिस विल्किसन बार-बार उसे आने वाले बिछोह की याद दिलाती लेकिन फिलिप का मन लन्दन के प्रति उमंग से भरा था। आखिर वहाँ वह अपनी मर्ज़ी का मालिक होगा। वह अपनी भविष्य की योजनाओं पर बात करता लेकिन मिस विल्किसन फिर बिसूरने लगती, ''इसका मतलब तुम मुझे भूल जाओगे।''

फिलिप इस मान-मनौवल के चक्कर से ऊबने लगा। उसे मिस विल्किसन अपने से बहुत बड़ी, अजीब और निराश लगने लगी। फिर भी हेवर्ड को जब उसने पत्र लिखा तो उसमें शेखी मारते हुए यही लिखा कि आजकल एक फ्रांसीसी सुन्दरी उस पर फिदा है। वह दोस्त के सामने

सुर्खरू बनना चाहता था।

आखिरकार इस सारे प्रेम-प्रसंग पर पूर्णविराम लग गया। मिस विल्किंसन की छह हफ्ते की छुट्टी खत्म हो गयी। उसके जाने का दिन आ गया। स्टेशन पर उसने मिस्टर कैरी और फिलिप से विदा ली और फिर खिड़की के सहारे बैठ फूट-फूट कर रो दी।

गाड़ी चलने पर फिलिप को दुख की जगह राहत का ही एहसास हुआ।

पेरिस-प्रवास फिलिप के जीवन में एक नयी निराली अनुभूति से सम्पन्न अनुभव सिद्ध हुआ। उसका मुख्य उद्देश्य वहाँ चित्रकला सीखना था। उसने उस काम के लिए एमिरनो का स्टूडियो चुना। पहले दिन जब वह वहाँ पहुँचा उसके बाजू वाली मेज पर एक लड़की चित्र खींच रही थी। वह फैनी प्राइस थी। स्टूडियो में अधिकांश छात्राएँ ही थीं। एक नग्न स्त्री मॉडल के पोज़ में ऊँची जगह पर खड़ी थी। इससे पहले फिलिप ने कभी निर्वसन स्त्री देह नहीं देखी थी। उसे पसीने छूट गये। फिर धीरे-धीरे वह संयत हुआ।

फैनी प्राइस लगभग छब्बीस साल की थी। उसके बाल सुनहरे लेकिन उलझे हुए थे। उसका मुँह चपटा और आँखें छोटी थीं। चेहरे पर रंगत पीली तो थी, साथ ही ऐसा लगता था जैसे न वह ठीक से नहाती है न कपड़े बदलती है।

फैनी प्राइस ने अपने कागज पर से नज़र हटायी।

"तुम्हारा काम कैसा चल रहा है?"

"बिल्कुल नहीं।"

"अरे, पहले नाप लेकर कागज पर चौखुंटे तो बनाओ।"

उसने फिलिप के कागज पर चौखुंटे बना दिये।

फिलिप को उसकी चुस्ती अच्छी लगी पर उसकी विरूपता से वह घबरा रहा था।

तभी एक युवक स्टूडियो में आया। उसका चेहरा घोड़े के मुँह की तरह लम्बा था।

फैनी प्राइस ने उसे देखा, ''इतनी देर में आये हो!''

''रात बड़ी मस्ती रही। दिन में बिस्तर में बड़ा अच्छा लग रहा था।'' उस युवक ने कहा और फिलिप की ओर मुखातिब हुआ, ''इंग्लैंड से आये हो?''

''हाँ।''

''अमिरनो कैसे पहुँचे।''

''मुझे बस इसी का पता मालूम था।''

''ठीक है पर यह न सोचना यहाँ रह कर पेंटिंग सीख जाओगे।''

मिस प्राइस बोली ''यह पेरिस का सबसे अच्छा स्कूल है, जहाँ कला के प्रति गम्भीरता है।''

''क्या कला गम्भीरता से लेने वाली चीज है?'' युवक ने कहा, ''यों तो सभी स्कूल एक से हैं पर यह कुछ अच्छा इसलिए है कि यहाँ पढ़ाने वाले ज्यादा बेवकूफ हैं।''

''फिर आप यहाँ क्यों आते हैं?'' फिलिप ने पूछा।

''यों ही, यह सब जानते हुए भी। वैसे पेंटिंग सीखने का सही तरीका है कि स्टूडियो लो, मॉडल बुलाओ और खुद प्रयोग करो।''

''यह तो आसान है।''

''पर महँगा।''

क्लटन पेंट करने लगा। फिलिप ने गौर किया वह बेहद दुबला था। उसकी कुहनियाँ इतनी नुकीली थीं कि लगता था कोट की बाँह में से बाहर निकल पड़ेंगी। उसके जूतों में पैबन्द लगे थे।

फैनी प्राइस ने फिलिप का कागज सँभालते हुए कहा, ''अगर क्लटन चुप करे तो मैं तुम्हें मदद करूँ।''

क्लटन बोला, ''फैनी मुझसे चिढ़ती है क्योंकि मेरे अन्दर प्रतिभा है।''

मिस प्राइस गुस्से से काँपने लगी, ''सिर्फ तुम ऐसा सोच सकते

हो।''

तभी घंटा बजा। मॉडल स्टेंड पर से नीचे उतर आयी। फैनी प्राइस लंच के लिए अपने कमरे पर चली गयी। फिलिप और क्लटन 'ग्रेवियर' की ओर चल पड़े।

''तुमने फैनी प्राइस को प्रभावित कर लिया है, खुदा खैर करे,'' क्लटन ने कहा।

फिलिप हँसा पर वह खुश नहीं था। फैनी प्राइस ने उसे आकर्षित ही नहीं किया था।

ग्रेवियर एक सस्ता रेस्तरां था जहाँ एक फ्रैंक में, अंडा, गोश्त, पनीर और शराब की एक छोटी बोतल मिल जाती। कॉफी का दाम अलग से देना पड़ता।

क्लटन ने रेस्तरां में फिलिप का परिचय फ्लेनेगन और लॉसन से कराया।

हालाँकि इससे पहले एक मर्तबा फिलिप पेरिस आ चुका था, उसे पेरिस नवीन और भिन्न लग रहा था।

लॉसन और फ्लेनेगन का बातचीत का अन्दाज बड़ा निराला और आक्रामक था। वे सब मिलकर जापानी चित्रकला और फिर रैफेल के बारे में बोलने लगे।

लॉसन ने कहा, ''रैफेल तभी अच्छा पेन्ट करता था जब दूसरों की चोरी करता था। हुँह, रैफेल।''

फ्लेनेगन ने कहा, ''थोड़ी जिन हो जाय।''

लॉसन बोला, ''हर समय कला की बात भी कितनी जानलेवा होती है। भाड़ में जाये कला।''

महफिल में एक और अमरीकी युवक भी था। उसके बाल गहरे भूरे थे और वह सुन्दर था। लॉसन के साथ वह ''मॉने'' की पेंटिंग को लेकर भिड़ गया। लॉसन को 'मॉने' महान लगता था जबकि अमरीकी युवक का कहना था वह बेहद मामूली है। इसी तरह एक और युवक क्रॉन्शॉ का दावा था कि वह बहुत बड़ा पेंटर बनेगा क्योंकि उमसें अभी

से बहुत प्रतिभा है।

फ्रांस में चित्रकारों की आमदनी बहुत ज्यादा नहीं थी क्योंकि वह तभी हो सकती थी जब कोई चित्रकार अमीर अमरीकियों द्वारा संरक्षण पाकर पोर्ट्रेट बनाए। लेकिन अधिकांश युवा चित्रकारों में एक धुँधला आदर्शवाद, अस्पष्ट अध्यात्मवाद मौजूद था। वे कला के पुजारी की तरह बोलते और अपने संघर्ष में जुटे रहते। एक दिन फिलिप फैनी प्राइस के साथ 'लूव्र' में मोनालीजा देखने गया। फिलिप को वाल्टर पेंटर द्वारा की गयी इस चित्र की सराहना याद आयी और उसे यह चित्र बेहद सुन्दर लगा। फैनी प्राइस 'लूव्र' से भलीभाँति परिचित थी। उसने रैम्ब्रां के चित्र भी दिखाये, उनकी बारीकियाँ समझायीं। फिर वे दोनों एक सस्ते से रेस्तरां में खाना खाने गये।

फिलिप आने जाने वालों को दिलचस्पी से देखने लगा।

"वह देखो, उस आदमी ने कैसा भेस बना रखा है।" फिलिप ने कहा।

मिस प्राइस उस ओर न देखकर अपनी प्लेट की ओर देख रही थी। उसके गालों पर दो आँसू लुढ़क गये।

"क्या हुआ?" फिलिप ने पूछा।

"अगर तुमने कुछ भी पूछा तो मैं उठकर अभी चली जाऊँगी।"

फिलिप कुछ समझ नहीं पाया। तभी बैरा ऑमलेट ले आया। वे दोनों आधा-आधा करके खाने लगे। फिलिप ने आश्चर्य से देखा कि फैनी एक भुक्खड़ की तरह खा रही थी। जैसे पिंजरे में कैद जानवर खाना आते ही उस पर टूट पड़ता है, इस तरह।

क्लटन, लॉसन, फ्लेनेगन सबका कहना था कि फैनी प्राइस फिलिप के प्यार में पड़ गयी है। पर फिलिप को जब उसके उलझे बाल, मैले हाथ, और गन्दी भूरी फ्रॉक याद आती तो उसे यह बात नागवार गुजरती। यह ठीक है फैनी को पैसे की तंगी थी, उन सभी को तंगी रहती थी। पर कम से कम वह साफ तो रह सकती थी।

इन दिनों सभी युवा चित्रकारों की एक ही समस्या थी—प्रेमिका।

सभी को जीवन में एक अदद प्रेमिका की कमी खटक रही थी। लेकिन फिलिप ने अपने को पढ़ाई-लिखाई में कुछ इस कदर उलझा लिया था कि ज्यादा अकेलापन महसूस ही नहीं होता। मिस विल्किंसन के पत्र अभी भी यदा-कदा आते जिन्हें वह बिना पढ़े पटक देता। फिलिप का पहनावा अब अन्य चित्रकारों जैसा होता जा रहा था। उसने बाल भी बढ़ाने शुरू कर दिये। हाँ, दाढ़ी उसके चेहरे पर ज्यादा थी ही नहीं जो बढ़ाता।

जल्द ही फिलिप को अन्दाजा लग गया कि ये सब नवयुवक क्रॉन्शॉ के विचार उधार लेकर बोला करते हैं। क्रॉन्शॉ एक बेहद गन्दी बस्ती में रह रहा था। उसके साथ एक स्त्री भी थी जिसे अब तक सिर्फ लॉसन ने देखा हुआ था। चित्र-प्रदर्शनियों की समीक्षा और अनुवाद कार्य से क्रॉन्शॉ अपना गुजारा चलाता। पहले वह एक अखबार के दफ्तर में काम करता था पर जल्द उसकी वहाँ से छुट्टी हो गयी। अब उसे पेरिस इतना भाने लगा था कि गर्मियों में भी वह कहीं बाहर न जाता। लेकिन अभी तक क्रॉन्शॉ को फ्रेंच बोलने का अभ्यास नहीं था। वह ज्यादातर अंग्रेजी ही बोलता।

क्रॉन्शॉ खुद कहता था कि अगर वह डेढ़ सौ साल पहले पैदा हुआ होता तो निश्चित ही एक कामयाब़ इंसान होता।

फिलिप उसे अच्छा लगता था।

एक दिन उसने फिलिप से कहा, ''सुना है तुम्हें मेरी कविताएँ पसन्द नहीं।''

फिलिप सकपका गया। उसने कहा, ''नहीं ऐसा तो नहीं है!''

''अब तुम झूठी तारीफ मत करना। मैं खुद अपनी कविताओं को बहुत महत्त्व नहीं देता। जीवन जीने के लिए बना है, लिखने के लिए नहीं। रही अमर होने की बात तो किसको परवाह है अमरता की।'' क्रॉन्शॉ ने फिलिप का ग्लास भरा।

''तुम सोच रहे होगे फिलिप कि मैं ऐसी बातें करता हूँ और रहने को मेरे पास एक गन्दा कमरा और एक बेवफा औरत है। मैं उन नुमाइशों

की समीक्षा लिखता हूँ जो गाली देने के काबिल भी नहीं हैं। अच्छा तुम्हीं बताओ जीवन का अर्थ क्या है?''

''यह तो बड़ा मुश्किल सवाल है। आप ही बताएँ।''

''इसका जवाब तो हरेक को अपनी तरह से ढूँढ़ना पड़ता है।''

''मेरा ख्याल है अपना काम करना, अपनी क्षमताओं का उपयोग करना और दूसरों को दुख न पहुँचाना, यही जीवन का अर्थ है।''

''यानी जैसा व्यवहार दूसरों से चाहते हो वैसा करना।''

''हाँ।''

''ईसाई धर्म का सन्देश।''

''नहीं'', फिलिप ने कहा, ''नैतिकता कह लीजिए।''

''अगर तुम यहाँ मेज पर अपना पर्स भूल जाओ और मैं उसे लौटाने आऊँ तो क्या इसे तुम नैतिकता कहोगे?''

''बेशक।''

''गलत। नैतिकता एक पाखंड है। मैं तो पुलिस के डर से इसे लौटाऊँगा। सभ्य समाज में पुलिस का डर इस कदर समा गया है।''

''इस तरह तो सभी मूल्य खत्म हो जाएँगे।''

''अच्छा यह बताओ, क्या तुमने कभी पाप किया है?''

''शायद।''

''मैंने कभी पाप नहीं किया।''

''कैसे?''

''मुझे अपने किसी काम पर कभी पश्चाताप ही नहीं हुआ तो पाप कैसा?''

''सब ऐसे सोचें तो समाज नष्ट हो जाये।''

''मैं समाज को नहीं मानता। मैं अपने को मानता हूँ। अपने संसार की धुरी मैं स्वयं हूँ। सबसे जरूरी है अपनी खुशी की तलाश।''

''नहीं।'' फिलिप ने विरोध किया।

''तुम मेरी बातों से घबराते हो पर जिन धूर्तों ने तुम्हें नैतिकता का पाठ पढ़ाया है वे खुद समाज के वंचित लोग थे। वे नहीं चाहते कि तुम

कभी भी जीवन का आनन्द ले सको।''

गर्मियाँ शुरू होते ही इन युवा चित्रकारों में बेचैनी छा गयी। सभी कहीं न कहीं जाना चाहते थे। उनकी सौन्दर्य चेतना को नीले आकाश, मन्द पवन और गरजते समुद्र से निमन्त्रण मिल रहा था। फ्लेनेगन और पॉटर कानकारने चले गये। मिसेज ऑटर पोनएवन चली गयी। फिलिप, लॉसन और मिस चेलिस ने 'मोरे' में फॉन्टनब्लो के वन में जाने की योजना बनायी। वहाँ एक सुन्दर होटल का भी उन्हें पता मालूम था। उन्होंने क्लटन से भी साथ चलने को कहा पर क्लटन ने मना कर दिया। जाने से एक दिन पहले, क्लास के बाहर फिलिप की मुलाकात फैनी प्राइस से हो गयी।

''मैं कल जा रहा हूँ।'' फिलिप ने कहा।

''कहाँ?'' फैनी ने पूछा। उसके चेहरे का रंग उड़ गया।

''गर्मी बिताने? तुम कहीं नहीं जा रहीं?''

''न, मैं यहीं रहूँगी। मैंने सोचा था तुम भी यहीं रहोगे।''

''यहाँ तो गर्मी में भुन जाओगी?''

''जैसे तुम्हें बड़ी परवाह है। कहाँ जा रहे हो?''

''मोरे।''

''चेलिस भी मोरे जा रही है। कहीं तुम उसी के साथ तो नहीं जा रहे।''

''लॉसन भी जा रहा है। मुझे यह नहीं मालूम कि हम तीनों इकट्ठे जा रहे हैं या अलग-अलग।''

मिस प्राइस लाल पीली हो गयी।

''छि: छि: मैं सोचती थी तुम शरीफ आदमी हो। चेलिस तो क्लटन, पॉटर और फ्लेनेगन सब के साथ रह चुकी है। और अब तुम दोनों, छि:।''

''क्या बकवास कर रही हो। मिस चेलिस एक सभ्य लड़की है।''

''चुप रहो।''

''पर तुम्हें क्या, मैं कहीं भी जाऊँ।''

''मैं ही मूर्ख थी जो सोचती थी गर्मी में तुम यहाँ रहोगे, हम साथ-साथ चित्र बनाएँगे, साथ-साथ कला दीर्घाओं में घूमेंगे। चेलिस तो बात करने के काबिल भी नहीं।''

फैनी दुख और क्रोध में रो रही थी। फिलिप इस नाटक से ऊब गया। उसकी ऊल-जलूल शख्सीयत से उसे विरक्ति हुई।

''तुम सब एक से होते हो, तुम पुरुष। तुम्हें रिश्तों में सिर्फ लेना आता है, देना नहीं। आज पेंटिंग में जो कुछ तुम जानते हो सब मैंने तुम्हें सिखाया है। तुम हजार साल भी पेंटिंग करोगे तो भी पेंटिंग नहीं सीख सकोगे क्योंकि तुम्हारे अन्दर कोई प्रतिभा नहीं है। तुम पेंटर बनोगे ही नहीं, कभी नहीं।''

''इससे तुम्हें क्या?''

''तुम सोचते हो सिर्फ मैं ऐसा कह रही हूँ। ये सब कहते हैं तुम प्रतिभाविहीन हो, क्लटन, चेलिस, लॉसन सब।''

फिलिप जाने लगा।

''तुम कभी पेंटर नहीं बनोगे, कभी नहीं।'' फैनी प्राइस पीछे से चिल्लायी।

मिस चेलिस ने मोरे में एक होटल में कमरा ले लिया। कमरे के साथ जुड़ी छत भी थी। खाने के बाद रात में वे तीनों अँधेरे में छत पर बैठे रहते और कला पर बहस छिड़ जाती। सामने पॉपलार के पेड़ों से होती हुई एक नहर बहती थी। सारा दिन ये तीनों चित्र बनाने की कोशिश करते पर सभी नये युवा चित्रकारों की तरह ये भी प्राकृतिक सौन्दर्य के दृश्यों से बहुत बचते थे। प्रकृति अपनी रंगारंग छटा में इनके आगे फैली थी। इन्हें डर था कि इन्हें कभी परम्परावादी न समझ लिया जाय। इसलिए ये प्रकृति को बेहद फीके रंगों में कैनवस पर उतारते। फिलिप अब तैल रंगों का प्रयोग कर रहा था। वह लॉसन से बुरी तरह प्रभावित था। कभी वह दिन में पढ़ता, कभी किराये की साइकिल लेकर घूमने

निकल जाता। जल्द ही फिलिप को लगा लॉसन और मिस चेलिस के बीच एक विशिष्ट सम्बन्ध है। उसे अपनी स्थिति पर गुस्सा आया। उसे कभी कोई इस तरह नहीं चाहता जैसे लॉसन को। पर जब वह मिस चेलिस को अपने सामने पाता तो उसे लगता वह उससे प्रेम नहीं कर सकता। शायद फिलिप की नियति यही थी कि वह केवल अनुपस्थिति में प्रेम कर सकता था।

जब वे लोग वापस पेरिस गये फिलिप ने पाया फैनी प्राइस वहाँ नहीं है। उसने मिसेज ऑटर से पूछा। पता चला वह अपने लॉकर की चाभी भी वापस कर गयी है। सम्भवत: वह इग्लैंड लौट गयी। फिलिप को राहत महसूस हुई। उसे फैनी की बदमिजाजी बुरी लगती थी।

आजकल लॉसन मिस चेलिस की पोर्ट्रेट बना रहा था। मिस चेलिस चित्र के लिए आदर्श पात्र थी। फिर वह अपनी जानकारी से लाभान्वित भी करती रहती थी। वह चित्रकला से मुख्यत: इसलिए जुड़ी थी क्योंकि उसे कलाकारों का जीवन प्रिय था। सिगरेट के धुएँ के बीच वह धीमी आवाज में कला के प्रेम और प्रेम की कला के विषय में अपने विचार और अनुभव सुनाती। उसके लिए ये दोनों एक विषय थे। लॉसन पोर्ट्रेट पर बड़ी मेहनत कर रहा था। लेकिन खत्म होते-होते गड़बड़ हो गयी।

''अब तो नयी कैनवस पर फिर से शुरू करना पड़ेगा।'' लॉसन ने हताश होकर कहा।

मिस चेलिस ने कहा, ''फिलिप, तुम भी मेरा पोर्ट्रेट क्यों नहीं बनाते। मिस्टर लॉसन से तुम बहुत कुछ सीख सकोगे।''

''लॉसन को बुरा तो नहीं लगेगा?'' फिलिप ने कहा।

''बिल्कुल नहीं।'' लॉसन बोला।

फिलिप गर्व और घबराहट की मिली-जुली अनुभूति के साथ पोर्ट्रेट करने बैठा। चित्र पूरा करने के बाद उन्होंने क्लटन को दिखाया।

क्लटन अभी हाल ही में स्पेन से लौटा था और एल ग्रेको नामक एक चित्रकार से बेहद प्रभावित था। लौटकर उसने पहला काम किया कि अपने सारे चित्र नष्ट कर डाले। वह अब नये सिरे से काम करना

चाहता था।

"तो तुम लोग भी पोर्ट्रेट बनाने के चक्कर में पड़ गये।"

फिलिप शरमा गया।

"मॉडल बढ़िया है और रेखाएँ भी तुम्हारी बुरी नहीं हैं। पर मैं इस सबको महत्त्व नहीं देता। अब लॉसन तुमने पारम्परिक शैली में एक सुन्दर कलाकृति बना डाली है जब कि तुम्हारी पेंटिंग से यह पता चलना चाहिए था कि तुम्हारी मॉडल एक चालू छोकरी है। चित्र में आत्मा का दर्शन होना चाहिए।"

क्लटन के जाने के बाद लॉसन किटकिटाया, "अगर यथार्थवाद से आत्मा नहीं दिखती तो और कोई क्या करे!"

इस बीच फिलिप का एक नया मित्र बना मिगुअल एजुरिया। वह दुबला लेकिन सुडौल, तीखे नाक नक्श और छोटी दाढ़ीवाला युवक था। बिना थके वह घंटों मॉडेलिंग कर लेता। बातचीत के दौरान फिलिप को पता लगा वह स्पेन का था और पेशे से लेखक था। वह उपन्यास लिखने पेरिस आया था पर आर्थिक कारणों से मॉडल बन रहा था।

फिलिप ने उससे कहा, "तुम पेरिस में रहकर क्यों लिखना चाहते हो? अपने देश के बारे में लिखो।"

"स्पेन मर चुका है। वहाँ न साहित्य है न कला। वह खत्म हो चुका है।"

वह लेखन में जोला से प्रभावित था। उसने फिलिप को अपने उपन्यास का कथानक बताया। फिलिप को वह बेहद बचकाना लगा। लेकिन मिगुअल को अपने पर बेहद आत्मविश्वास था।

एक दिन सुबह जब फिलिप बाहर जाने को था, मकान-मालिक ने उसे एक चिट्ठी थमाई। पत्र इस प्रकार था "प्लीज, जल्दी आओ, मुझसे और ज्यादा बर्दाश्त नहीं हो रहा। कोई और मेरा स्पर्श करे यह मैं सहन नहीं करूँगी।

—फैनी प्राइस

पुनश्च—मैंने तीन दिन से कुछ भी नहीं खाया है।"

फिलिप को चिन्ता हुई। उसने नहीं सोचा था कि फैनी प्राइस पेरिस ही में है। कई महीनों से उसका कहीं. नामोनिशान नहीं था।

जब वह उसके घर पहुँचा, पता चला दो रोज से उसका कमरा बन्द है और वह बाहर नहीं निकली है। पुलिस की देखरेख में कमरे का दरवाजा तुड़वाया गया तो पाया कि छत की कड़ी से फैनी प्राइस का निर्जीव शरीर झूल रहा है। फिलिप आतंक से ठंडा पड़ गया।

मकान मालिक ने बाद में बताया कि फैनी बेहद तंगी में दिन बिता रही थी। मकान का कई महीनों का किराया बकाया था। सिर्फ एक छोटी बोतल दूध और डबलरोटी से वह पूरा दिन काटती। उसके किसी सम्बन्धी का पता ढूँढ़ निकालने में फिलिप को काफी मेहनत पड़ी। खबर देने पर उसका भाई एल्बर्ट प्राइस पहुँचा। वह इंग्लैंड में रबड़ का व्यापारी था।

आकर उसने बड़े शुष्क तरीके से फैनी का अन्तिम संस्कार निपटा दिया जबकि फिलिप अन्दर तक विचलित था। इस सबके तुरन्त बाद एल्बर्ट को भूख लग आयी और उसने एक रेस्तराँ में डटकर खाना खाया। उसका साथ देते हुए एल्बर्ट को लगातार वह दिन याद आता रहा जब वह फैनी प्राइस को लेकर रेस्तराँ में गया था और दो बूँद आँसू उसकी आँखों से ढुलक पड़े थे। एल्बर्ट पेरिस की रंगीनियों के बारे में जानना चाहता था पर फिलिप इतना बोलने की मन:स्थिति में नहीं था। किसी तरह एलबर्ट विदा हुआ।

सभी चित्रकार अपने दो-दो चित्र सेलन भेज रहे थे। फिलिप ने भी तय किया वह अपने चित्र भेजेगा। पर भेजने से पहले उसने क्लटन से कहा, ''एक नजर मेरी तस्वीरें देख लो।''

''नहीं।''

''क्यों?'' फिलिप ने पूछा।

''क्योंकि लोग कहते हैं चित्र पर निष्पक्ष राय दो बातों पर चाहते हैं कि उनकी तारीफ की जाय। अव्वल तो तुम्हारे चित्र सेलन से अस्वीकृत

होकर लौट आयेंगे नहीं तो अगर दीर्घा में लग भी गये तो लोग दस सेकेंड सामने रुक कर सरसरी तौर पर देख लेंगे। यह भी हो सकता है कि कोई मूर्ख इन तस्वीरों को खरीद ले और अपने कमरे की दीवार पर टाँग दे पर फिर वह इसकी तरफ से ऐसे ही निरपेक्ष हो जायेगा जैसे अपनी मेज कुर्सी की तरफ से।''

बीस साल बाद के क्लटन का भविष्य अभी से साफ दिखायी दे रहा था, क्रूर, अकेला, कटखना और अज्ञात कलाकार जिसकी अपने साथ-साथ सारी दुनिया से लड़ाई जारी हो।

फिलिप को महसूस हुआ कि सभी कलाकार किसी ऐसी ऊर्जा से चालित थे कि उन्हें अपने काम के आगे जीवन का यथार्थ भी तुच्छ लगता। पर जीवन केवल अंकित करने के लिए नहीं होता। फिलिप ने तय किया वह अपनी चित्रकला के विषय में जल्द अन्तिम निर्णय पर पहुँचेगा। वह यों ही मामूली, दूसरे दर्जे का कलाकार बनकर नहीं रह जाना चाहता था। संयोग से अगले दिन क्लास में फॉयने का आना हुआ। फिलिप ने आगे बढ़कर कहा—

''सर मैं दो साल से आपके मार्ग निर्देश में काम कर रहा हूँ। कृपया यह तो बता दीजिए मेरे अन्दर कोई प्रतिभा है या नहीं। मैं बहुत गरीब हूँ। अगर मैं पेंटर बनने लायक नहीं हूँ तो कुछ और करूँ!''

फॉयने ने उसकी ओर देखा, ''क्या तुम्हें नहीं पता चलता तुम्हारे अन्दर प्रतिभा है या नहीं।''

''अपने पता चलने में गलती हो सकती है। यहाँ मेरे बहुत से दोस्त सोचते हैं वे प्रतिभा सम्पन्न हैं पर मैं जानता हूँ वे गलती कर रहे हैं।''

फॉयने के चेहरे पर मुस्कान आयी। ''कहाँ रहते हो?''

''पास ही।''

''चलो, तुम्हारी तस्वीरें देख ली जायें।''

उत्तेजना के मारे फिलिप का बुरा हाल हो गया। उसने कल्पना की फॉयने उसके चित्र देखकर उछल पड़ेगा, उसका हाथ दबाकर कहेगा, ''तुम तो जीनियस हो।''

पर उसके सारे चित्र देखने के बाद फॉयने ने कहा, "बस या और कुछ?"

सिगरेट पीते हुए फॉयने ने कहा, "देखो अगर तुम्हारे पास फेंकने को पैसे नहीं हैं तो इस शहर और धन्धे से जितनी जल्द भाग सको भाग लो। लगातार आर्थिक चिन्ताएँ करना कलाकार के लिए पतनशील साबित होता है। जो कहते हैं कि पैसे की तंगी रचनात्मकता को नयी धार देती है झूठे और मक्कार लोग हैं। गरीबी, कलाकार के पंख कतर देती है, उसकी आत्मा तक को चबा जाती है। कम से कम गुजारे भर की आमदनी तो कलाकार को मिलनी ही चाहिए।"

"इसका मतलब मेरा यहाँ कोई भविष्य नहीं है।"

"तुम्हारे हाथ में कौशल है पर तुम जैसे तो हजारों कलाकार होंगे। इस कौशल से तुम सिर्फ एक सामान्य कलाकार बन सकोगे।"

"मैं आपका आभारी हूँ कि आपने मुझे साफ-साफ बता दिया।"

फॉयने उठ खड़ा हुआ, "मेरी सुनो तो किसी और क्षेत्र में हाथ आजमाओ। मैं जब तुम्हारी उम्र का था मुझे किसी ने नहीं समझाया कि मेरे अन्दर बेहद मामूली प्रतिभा है।"

फिलिप ने हैरानी से मास्टर की तरफ देखा। उसके होठ हँस रहे थे पर आँख गमगीन थी।

"मेरी उम्र पर अपनी सामान्यता का बोध होना भी काफी दुखद है।" फॉयने चला गया।

एक चिट्ठी आयी पड़ी थी। विलियम कैरी की लिखावट में चिट्ठी इस प्रकार थी—

"प्रिय फिलिप,

तुम्हें सूचित करते हुए मुझे खेद है कि तुम्हारी ताई आज सुबह गुजर गयीं। वह अचानक किन्तु शान्ति से मृत्यु को प्राप्त हुई। प्रभु यीशु मसीह अवश्य उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करेंगे। तुम्हारी ताई की हार्दिक इच्छा थी कि उनके अन्तिम संस्कार में तुम शरीक हो। जल्द

से जल्द घर आओ। मेरे कन्धों पर बहुत बोझ आ गया है। तुम अवश्य आओगे।

तुम्हारा अंकल,
विलियम कैरी।''

फिलिप अगले रोज ब्लैकस्टेबल पहुँच गया। माँ की मृत्यु के बाद से फिलिप ने अपने किसी सम्बन्धी का अन्त नहीं देखा था। ताई के निधन से वह बहुत दुखी हुआ। उसे अपनी मौत भी अब एक सम्भावना की तरह दिखाई दी। यह सोचना मुश्किल था कि ताऊजी लुइजा ताई के बगैर कैसे जिएँगे क्योंकि चालीस साल दोनों सुख-दुख के साथी रहे थे। फिलिप को लगा मिस्टर कैरी तो बिल्कुल टूट गये होंगे। वह मन ही मन कुछ कह सकने की तैयारी कर रहा था। डाइनिंग रूम में मिस्टर कैरी अखबार पढ़ रहे थे। उन्होंने फिलिप की ओर देखा—

''तुम्हारी गाड़ी लेट थी।''

फिलिप रो लेना चाहता था लेकिन मिस्टर कैरी ने अखबार उसके आगे कर दिया, ''यह देखो, ब्लैकस्टेबल टाइम्स में तुम्हारी ताई के बारे में बड़ा अच्छा नोट छपा है।''

फिलिप ने पढ़ा।

''तुम ताई के दर्शन करना चाहते हो?''

फिलिप ने सिर हिलाया।

वे दोनों ऊपर गये। फूलों के बीच लुइजा का पार्थिव शरीर पड़ा था।

वे घुटने टेक कर बैठ गये। मिस्टर कैरी एक-एक पुष्पमाल इशारा कर बताने लगे, ''यह उस गिरजाघर के पादरी ने भेजी है, यह दूसरे वाले ने। मेरा ख्याल है चाय पी जाये।''

चाय पर मिस्टर कैरी बोलते रहे, ''अब तक चौबीस मालाएँ आ चुकी हैं। मिसेज रालिंगसन के शव पर बत्तीस चढ़ी थीं। मेरा ख्याल है कल तक बत्तीस तो हो जाएँगी।''

फिलिप ने सोचा था कुछ भी खाना उचित न होगा पर मिस्टर कैरी

को खाते देख उसने भी नाश्ता कर लेना ठीक समझा। जब फिलिप चुरुट सुलगाने लगा मिस्टर कैरी ने मना कर दिया, ''जब तक तुम्हारी ताई घर में हैं तब तक मत पियो।''

चर्च से लेकर कब्रिस्तान तक फिलिप को अपने ताऊजी के यथार्थवाद और बदमिजाजी के कई दृश्य देखने को मिले। फिर भी जब उन्होंने फिलिप से कुछ दिन ठहरने का अनुरोध किया वह मान गया।

दरअसल उसे खुद अपने बारे में सोचने के लिए थोड़ा अवकाश चाहिए था। उसे लग रहा था कि चित्रकला उसका क्षेत्र नहीं है। पेरिस के कलाजीवियों की जिन्दगी उसे बेहद छिछली लगने लगी। उसने लॉसन को लिखकर अपना शेष सामान भी वापस मँगा लिया।

मिस्टर कैरी ने यह सब देखा—''यह क्या माजरा है?''

''कुछ नहीं, मैं अब पेंटिंग छोड़ रहा हूँ।''

''क्यों?''

''यों ही, मैं एक मामूली कलाकार की मौत नहीं मरना चाहता।''

''जब मैंने तुमसे कहा था कि पेरिस जाना गलत होगा तब तो तुम नहीं माने।''

''अब मैं मानता हूँ।''

''अब क्या करोगे?''

''सोचूँगा।''

''देखो तुम बच्चे नहीं रहे हो। यह ठीक है कि तुम अपनी सम्पत्ति के मालिक हो पर वह भी इतनी नहीं है कि जिन्दगी भर बैठे-बैठे खाओ। फिर तुम्हारा यह पैर भी तुम्हारी कोई बहुत मदद नहीं करेगा, दौड़-भाग में।

फिलिप ने पाया कि जब भी कोई उससे नाराज होता उसकी विकलांगता का जिक्र छेड़ देता।

''सुनूँ तो इन दो सालों में पेरिस में तुमने कौन तीर मारा।''

''मैं आनन्द से रहा और मैंने बहुत कुछ देखने की दृष्टि पायी जैसे देह, पेड़, घर और आकाश।''

"तुम सोचते हो तुम बड़े चतुर हो, तुम सिर्फ लापरवाह हो।"

मिस्टर कैरी के चले जाने पर फिलिप ने सोचा, सच अगर वह लापरवाह न होता तो अब तक मर चुका होता।

फिलिप को क्रॉन्शॉ की कही एक बात याद आयी, 'दार्शनिक नैतिकता जैसी कोई चीज जीवन में नहीं हुआ करती।'

फिलिप का ईसाई धर्म पर से यकीन उठ चुका था पर नैतिकता उसके अन्दर अभी थी।

फिलिप ने अपना समय अध्ययन में लगाना शुरू किया। एक नया संसार किताबों के जरिये उसे हासिल होता गया। सितम्बर भी इसी तरह बीत गया। मिस्टर कैरी ने जोर देकर उसे मेडिकल कॉलेज, लन्दन में पढ़ने के लिए राजी कर लिया।

फिलिप एक बार फिर, यानी दूसरी बार जीवन की तीसरी शुरुआत करने घर से बाहर निकला।

मेडिकल कॉलेज में प्रवेश लेने लायक न्यूनतम योग्यता फिलिप के पास थी। दाखिले में कोई दिक्कत नहीं हुई। पास ही उसे एक छोटा-सा कमरा भी मिल गया। पहले दिन ऐनेटमी की कक्षा में उसका परिचय डन्सफोर्ड नामक छात्र से हुआ जो चीर-फाड़ की कक्षा में भी उसका साथी था। शुरू के कुछ दिन तो फिलिप और उसके साथियों को कॉलेज की दीवारों से लेकर, खाने, बिस्तर और यहाँ तक कि अपने आप से अजीब किस्म की बू आयी पर धीरे-धीरे वे इसके अभ्यस्त हो चले।

डन्सफोर्ड और फिलिप अक्सर एक चायघर में जा बैठते। वहाँ की वेट्रेस (परिचारिका) डन्सफोर्ड को बहुत पसन्द थी।

"तुम्हें इसमें क्या दिखता है?" फिलिप कहता।

"इसका चेहरा बड़ा प्यारा है।"

"बाकी देह तो देखो, सूखी ठठरी।" फिलिप कहता।

उसे वह बिल्कुल सुन्दर नहीं लगी। धीरे-धीरे उन्हें उसका नाम पता लगा—मिल्ड्रेड।

डन्सफोर्ड सुन्दर युवक था। मिल्ड्रेड से लिफ्ट न मिलने पर वह

एक-दूसरे चायघर में जाने लगा। पर फिलिप वहीं बैठता। वह कागजों पर, आते-जाते लोगों का चित्र बनाता। एक दिन उसने मिल्ड्रेड का स्केच बना कर वहीं मेज पर छोड़ दिया। अगले दिन जब वह गया चायघर में बड़ी उत्तेजना थी। सभी परिचारिकाएँ अपना स्केच बनवाना चाहती थीं।

धीरे-धीरे फिलिप और मिल्ड्रेड में इतना परिचय हो गया कि वे साथ-साथ नाटक देखने जाने लगे।

वापस घर जाने पर फिलिप को मिल्ड्रेड की एक-एक हरकत याद आती और आन्दोलित करती। वह एक बार फिर प्रेम में पड़ चुका था।

अगली सुबह फिलिप जब सोकर उठा उसे मिल्ड्रेड का ख्याल आया। उसने सोचा इस वक्त अगर वह विक्टोरिया स्टेशन चला जाये तो मिल्ड्रेड से मुलाकात हो सकती है।

झटपट तैयार होकर वह स्टेशन पहुँचा। कुछ ही देर में उसे मिल्ड्रेड वहाँ दिखायी दी। पर वह उसे देखकर खुश नहीं हुई। वह जल्दी में थी।

''क्या मैं तुम्हारे साथ-साथ विक्टोरिया स्ट्रीट तक चलूँ।'' फिलिप ने पूछा।

''मुझे पहले ही देर हो गयी है। मैं तेज चलूँगी और तुमसे इतनी तेज चला नहीं जायेगा।''

मिल्ड्रेड चली गयी। फिलिप को उससे इसी क्षण नफरत हो आयी। मिल्ड्रेड ने उसके लँगड़ेपन का जिक्र जो कर दिया था।

दोपहर में उसने तय किया वह वहाँ चाय पीने नहीं जायेगा। पर उसका अपने पर वश नहीं था।

जब वह वहाँ पहुँचा, मिल्ड्रेड ने हँसकर उसका स्वागत किया।

''माफ करना सुबह मैं जल्दी में थी, फिर तुमसे मिलने की कोई बात भी नहीं थी।''

''कोई बात नहीं।''

फिलिप के कलेजे से मानो बोझ उतर गया। रात जब मिल्ड्रेड की ड्यूटी खत्म हुई, फिलिप उसे छोड़ने स्टेशन तक गया। मिल्ड्रेड बड़े

अनमने ढंग से उसकी सेवाएँ लेती रहती। अक्सर उनमें नोकझोंक हो जाती।

शनिवार को फिलिप ने एक ऑपेरा की दो टिकटें खरीदीं और चायघर जाकर मिल्ड्रेड को आमन्त्रित किया।

''आज तो मैं नहीं आ सकती?''

''फिर इन टिकटों का क्या होगा?''

''मैं क्या जानूँ। मैं आज व्यस्त हूँ।''

''तुम जरूर उस जर्मन दोस्त मिलर के साथ जा रही होंगी। जाने उसमें तुम्हें क्या नजर आता है?''

''तुम्हें इससे क्या मतलब, मैं किसी के भी साथ जाऊँ।''

फिलिप आहत हो गया। शाम को वह चायघर के सामनेवाले फुटपाथ पर खड़ा हो गया।

थोड़ी देर में मिल्ड्रेड सजी-धजी निकली। उसकी नजर फिलिप पर पड़ी ''तुम यहाँ जासूसी करने आये हो।''

''नहीं, हवाखोरी करने।''

''मैं सोचती थी तुम एक शरीफ आदमी हो।''

''कोई भी शरीफ आदमी तुममें दिलचस्पी क्यों लेगा?''

इस वक्त फिलिप मिल्ड्रेड को आहत करना चाहता था।

''चले जाओ यहाँ से।''

''नहीं जाऊँगा। तुम मिलर के साथ जा रही हो?''

''नहीं, मैं उससे मिली भी नहीं।''

''झूठी। मैंने दोपहर में उसे देखा था।''

''ठीक है, तुम्हारी जगह मैं उसे पसन्द करूँगी, बोलो क्या कर लोगे।''

फिलिप टूटने लगा, ''मिल्ड्रेड, यों मत सताओ। देखो मैं तुम्हें प्यार करता हूँ, मिलर तुम्हारी बिल्कुल परवाह नहीं करता। चलो, जहाँ तुम कहोगी, हम वहीं चलेंगे।''

''नहीं, मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगी।''

"तुम मेरा अपमान कर रही हो। याद रखो, अब मैं गया तो हमेशा के लिए जाऊँगा।"

"अच्छा है, जान छुटेगी।" मिल्ड्रेड ने तलखी से कहा।

फिलिप की शाम भयानक गुजरी। आत्मविश्लेषण करने पर उसने पाया कि वह अपनी दोस्ती का मटियामेट तो कर ही चुका था, पढ़ाई भी अब तक सिफर हुई थी। दो हफ्ते बाद इम्तहान थे और उसे कुछ भी नहीं आता था।

थोड़ी देर बाद उसे अपने पर गुस्सा आया कि वह यह क्यों कहकर आया कि अब वह कभी नहीं जायेगा। उसका मन पूरी तरह मिल्ड्रेड का गुलाम हो चुका था। क्लास में, कॉलेज के गलियारों में, सड़कों पर उसे बस एक चेहरे की तलाश रहती—मिल्ड्रेड की। आखिर में वही हुआ जो होना था। फिलिप परीक्षा में फेल हो गया। वह मिल्ड्रेड की वजह से फेल हुआ था अत: उसका मिल्ड्रेड से मिलना निहायत जरूरी था। वह चायघर गया।

उसे देखकर मिल्ड्रेड आर्डर लेने आयी।

"एक चाय और पेस्ट्री।"

"मैंने सोचा था तुम मर चुके हो।" मिल्ड्रेड ने कहा और मुस्करायी।

"तुम चिट्ठी लिख सकती थीं।" फिलिप ने कहा।

"इन फालतू कामों का मेरे पास वक्त नहीं हैं।"

शायद कोमलता मिल्ड्रेड के स्वभाव में थी ही नहीं।

चाय लाने पर उसने पूछा, "क्या मैं तुम्हारा साथ दूँ?"

"हाँ।"

"तुमने उस दिन मेरी जासूसी की, यह एक नीच हरकत थी। तुम कम से कम माफी तो माँग सकते हो।"

फिलिप का चेहरा सफेद पड़ गया।

मिल्ड्रेड को अपनी गलती का कोई एहसास तक नहीं था। लेकिन फिलिप को तो प्रेम का रोग लगा था। उसने बड़ी मुश्किल से कहा—

"मुझे उस दिन के व्यवहार के लिए अफसोस है।"

''अब मैं तुम्हें बता दूँ कि अब मिलर से मेरा कोई लेना-देना नहीं है। मैंने उसकी छुट्टी कर दी है।''

''मिल्ड्रेड आज बाहर चलें।''

मिल्ड्रेड ने अपने कपड़ों की तरफ देखा, ''नहीं, घर पर आंटी इन्तजार करेगी।''

''उन्हें मैं खबर कर दूँगा, प्लीज।''

आनेवाले दिनों में मिल्ड्रेड और फिलिप बहुत पास आ गये, इतना कि एक दिन फिलिप ने उससे शादी का प्रस्ताव कर डाला।

मिल्ड्रेड ने फौरन उसकी माली हालत के बारे में पूछताछ शुरू की।

''कितनी आमदनी है? बस चौदह सौ पौंड बैंक में हैं। इसका मतलब हफ्ते में तीन पौंड पर गुजारा करना होगा। ना बाबा, ऐसी शादी का क्या फायदा जिसमें पैसे का आराम न हो।''

''पर मैं तुम्हें प्यार करता हूँ।''

''वह तो ठीक है पर अगर शादी के बाद भी मैं खस्ताहाल रही तो क्या लाभ।''

फिलिप को बहुत बुरा लगा ''अगर मेरे अन्दर जरा-सी भी अक्ल बाकी हो तो मैं कभी तुमसे मिलने न आऊँ।''

कुछ दिन बाद फिलिप को खबर लगी कि मिल्ड्रेड और मिलर की शादी होने वाली है। फिलिप को अपने उदास होने का खतरा था पर वह झेल गया।

जल्द ही उसकी मुलाकात नोरा नेसबिट नाम की एक युवती से हुई जो जीविका के लिए सस्ते रोमांटिक उपन्यास लिखती थी। नोरा का अपने पति से तलाक हो चुका था। वह काफी समझदार किस्म की युवती थी। धीरे-धीरे उनकी दोस्ती गहरी हो गयी। फिलिप रोज शाम को उसके यहाँ जाने लगा। इस दोस्ती में वैसा तनाव नहीं था जैसा उसे मिल्ड्रेड के साथ महसूस होता था। इसलिए फिलिप की पढ़ाई में भी कोई बाधा नहीं पहुँच रही थी। मार्च में उसने परीक्षा पास कर ली। यकायक एक दिन मिल्ड्रेड उसके सामने आकर खड़ी हो गयी। इस वक्त वह इतनी पीली, बुझी और

बीमार लग रही थी कि उसे पहचानना भी मुश्किल था।

"मुझे मेरे पति ने छोड़ दिया है," कह कर वह रो पड़ी।

फिलिप द्रवित हो गया, "कब कैसे? इस हाल में कोई कैसे अपनी पत्नी को छोड़ सकता है।"

मिल्ड्रेड माँ बननेवाली थी।

धीरे-धीरे बातों के बीच फिलिप को पता चला कि मिल्ड्रेड की मिलर से शादी हुई ही नहीं थी। मिलर ने सिर्फ ढोंग किया था।

मिल्ड्रेड के पास फूटी कौड़ी भी नहीं थी।

दया, प्रेम और करुणा के वशीभूत फिलिप ने उसे दस पौंड दिये। बाद में उसके लिए उसने दो कमरों का एक मकान भी तलाश कर लिया। इस सब में उसे अजब विजय का भाव लग रहा था।

इस बीच वह नोरा के पास नहीं जा पाया। वह अपना ज्यादा वक्त मिल्ड्रेड के साथ बिताता।

मिल्ड्रेड अब पहले जैसी जली-कटी नहीं सुनाती थी। फिलिप एक बार फिर उसके प्यार में फँस गया।

जब तक मिल्ड्रेड का प्रसव नहीं हो गया वह फिलिप की ओर पूरा ध्यान और प्रेम उँड़ेलती रही। प्रसव के पश्चात मिल्ड्रेड स्वास्थ्य-लाभ के लिए ब्राइटन चली गयी। वहाँ उसने बच्ची को सुपुर्द करने के लिए परिवार भी ढूँढ़ लिया। इन सब योजनाओं का खर्च फिलिप ने उठाया।

लेकिन अन्ततः इस प्रसंग का अन्त दु:खद ही हुआ क्योंकि मिल्ड्रेड संवेदनशील लड़की नहीं थी। मौका पाते ही वह फिलिप के एक सुन्दर मित्र ग्रिफिथ के साथ मेलजोल बढ़ा बैठी और इस सारे प्रकरण में एक बार फिर फिलिप को असीम पीड़ा पहुँची।

इस दुखदायी प्रेम के अन्त का एक लाभ यह हुआ कि फिलिप ने अपना पूरा ध्यान और वक्त अब पढ़ाई पर लगा दिया। परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उसे डॉ. टिरेल के अधीन सेंट ल्यूक हॉस्पिटल में काम सीखने का मौका मिला। फिलिप की ड्यूटी बाह्य मरीज विभाग में थी। इस कार्य में फिलिप का काफी मन लगता था। बाह्य मरीज विभाग में

विविधता भी थी और मनोरंजन भी। उसी जैसा एक और छात्र डॉक्टर भी वहाँ ड्यूटी पर था। वे दोनों छोटे-मोटे केस खुद निपटा देते और गम्भीर रोगों के रोगियों को डॉ. टिरेल के पास भेजते! सेंट ल्यूक खैराती अस्पताल था। ज्यादातर यहाँ मजदूर, कारीगर, ग्वाले, किसान जैसे लोग आते। कभी-कभी मुफ्त चिकित्सा के लालच में सम्पन्न लोग भी फटेपुराने कपड़े पहनकर मरीजों में शामिल हो जाते पर डॉ. टिरेल ऐसे लोगों को तुरन्त पहचान लेता। वह फौरन कहता, "अगर आप इतनी महँगी अँगूठी पहन सकते हैं तो किसी प्राइवेट डॉक्टर से इलाज भी करा सकते हैं।"

फिलिप ने कभी नहीं सोचा था इस काम में उसका इतना मन लगेगा। वास्तव में फिलिप को मानव-सम्पर्क का अनूठा अवसर इसी क्षेत्र में मिला। कष्ट, रोग, मृत्यु के प्रति मरीजों का अलग-अलग दृष्टिकोण देखने लायक था! कोई हँसता आता तो कोई उदास। कोई अपने को कोसता तो कोई दुनिया को। सबकी आत्मा और दिमाग यहाँ आकर निर्वसन हो जाती। एक दिन फिलिप को लॉसन के पत्र से मालूम हुआ कि क्रॉन्शॉ आजकल लन्दन में बुरे हाल में रह रहा है। किसी तरह फिलिप ने उसे ढूँढ़ा। क्रॉन्शॉ आजकल कविताएँ लिख रहा था और उसने एक प्रकाशक भी ढूँढ़ लिया था। पर वह बेहद तंगी में था। फिलिप ने यथाशक्ति उसकी सहायता की किन्तु क्रॉन्शॉ अपना पहला कविता-संग्रह प्रकाशित देखने से पहले चल बसा।

तीन माह बाद फिलिप की ड्यूटी इनडोर मरीज विभाग में लग गयी। इसका मतलब था अस्पताल में भरती रोगियों से सम्पर्क। यह भी बुरा नहीं था। फिलिप पेशे से डॉक्टर और हृदय से कलाकार था। वह मरीज की न केवल देह की जाँच करता वरन् उसके स्वभाव और चरित्र में भी दिलचस्पी लेता। इसीलिए उसे थोर्प अथेलनी अच्छा लगा। वह पीलिया से पीड़ित था और अस्पताल में उसे इसलिए भरती किया गया क्योंकि रोग के कुछ चिह्न पकड़ में नहीं आ रहे थे। वह दुबला-पतला और छोटे कद का आदमी था। उसके हाथ बेहद गुलाबी और सुन्दर थे। उसका बोलने का ढंग भी सुसंस्कृत था। पेशे से वह पत्रकार था।

जल्द ही फिलिप का अथेलनी से अच्छा परिचय हो गया—इतना कि जब अथेलनी ठीक होकर जाने लगा उसने फिलिप को अपने घर पर भोजन के लिए आमन्त्रित किया। अथेलनी के नौ बच्चे थे जिनमें सबसे बड़ी लड़की सैली पन्द्रह वर्ष की थी। उसके गाल सेब की तरह लाल थे। वह सुन्दर और शर्मीली थी। उनके घर में सभी बच्चे दौड़-दौड़कर काम कर रहे थे। सैली ने उन दोनों को खाना खिलाया। अथेलनी का अपना जीवन-दर्शन था। वह एक कपड़ा कम्पनी का प्रेस-एजेंट था और उसे प्रति सप्ताह सिर्फ तीन पौंड वेतन मिलता। पर वह प्रसन्नचित था। उसने फिलिप से कहा, "मुझे ज्यादा पैसे क्या करने हैं। सैली दर्जी का काम करेगी और लड़कों को मैं देश की सेवा के लिए नेवी में डाल दूँगा—बस छुट्टी।"

अथेलनी परिवार ने फिलिप को इतना पसन्द किया कि वह वहाँ हर रविवार जाने लगा। एक दिन वह वहीं जाने के लिए पिकेडली सरकस पर बस की प्रतीक्षा में खड़ा था कि उसे यकायक मिल्ड्रेड दिखाई दी। एक क्षण को उसका दिल ठहर गया। वह चौराहा पार कर रही थी। उसने कॉली फ्रॉक और बड़ा-सा स्ट्रॉ हैट पहना हुआ था। कुछ देर फिलिप उसकी तरफ देखता रह गया। फिर उसे महसूस हुआ मिल्ड्रेड का शृंगार और चाल-ढाल कुछ असामान्य से लग रहे हैं। जल्द ही यह आशंका विश्वास में बदल गयी क्योंकि मिल्ड्रेड पास से गुजरते अजनबियों की ओर बड़े अजीब तरीके से मुस्करा रही थी। उसके इस पतन पर वह आश्चर्यचकित हो गया। वह उसके पास गया। उसे देख मिल्ड्रेड बुरी तरह चौंक गयी।

"छिः तुम्हारी यह हालत!" फिलिप ने कहा।

मिल्ड्रेड का चेहरा दुख से विकृत हो उठा।

"तुम्हें पैसे ही चाहिए तो थोड़े बहुत मेरे पास हैं, ये लो।"

"पता नहीं तुम क्या बक रहे हो। मैं तो यों ही घर जा रही थी।"

"चलो तुम्हारे घर चला जाय।"

"नहीं, इसकी इजाजत नहीं है।"

''फिर कहीं और बैठकर बात करें।''

मिल्ड्रेड उसे एक ऐसे ठिकाने पर लाई जहाँ शरीफ आदमियों को बैठने में भी संकोच हो। फिर उसने बताया कैसे वह इस हाल में पहुँची। जाते-जाते उसने फिलिप से पैसे लिये।

फिलिप ने फिर एक बार कहा, ''देखो तुम इस शर्मनाक जीवन से छुटकारा चाहती हो तो कोशिश करो। जहाँ तक काम का सवाल है, मेरे घर में एक नौकरानी सफाई और रसोई का काम करती है। उसे हटा कर मैं तुम्हें वह काम दे सकता हूँ। मेरे पास एक कमरा भी खाली पड़ा है। तुम बच्ची के साथ वहाँ रह सकती हो।''

मिल्ड्रेड ने रोना बन्द कर फिलिप की ओर देखा, ''तुम्हारा मतलब है इतना सब हो जाने के बाद भी तुम मुझे वापस रख सकते हो।''

फिलिप का चेहरा लाल हो गया। उसने कहा, ''हाँ, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि पुराने दिन और बातें भी लौट आयेंगी। न मैं तुमसे कुछ चाहूँ न तुम मुझसे। सिर्फ काम से मतलब रखना होगा तुम्हें।''

''आह फिलिप तुम कितने अच्छे हो!'' मिल्ड्रेड उसकी ओर बढ़ी।

''बस बस'' फिलिप ने उसे रोक दिया।

मिल्ड्रेड फिलिप के मकान में आकर बस गयी। वह उसके घर का पूरा काम करती। बच्ची भी अब प्रसन्न और स्वस्थ थी। लेकिन मिल्ड्रेड ने पास-पड़ोस में झूठ बोल रखा था कि यह वहाँ नौकरानी नहीं पत्नी की हैसियत से रहती है। जबकि सच्चाई यह थी कि फिलिप के मन में उसके लिए प्रेम की बजाय अब सिर्फ सहानुभूति थी। उसके हाल पर तरस खाकर उसने मिल्ड्रेड को शरण दी थी। मिल्ड्रेड ने कई बार फिलिप को आकर्षित करने की कोशिश की पर फिलिप दृढ़ रहा। उसे मिल्ड्रेड के नारी रूप से विरक्ति हो चुकी थी। केवल मानवतावश वह उसकी सहायता कर रहा था।

फिलिप को यह सोचकर अच्छा लगता कि जब वह घर में लौटकर आये उसे घर खुला मिले, खाना तैयार हो और वह आराम से बैठकर पढ़े-लिखे। अकेलेपन से उदासी जन्म लेती थी और उदासी से निराशा।

फिलिप इस दोनों स्थितियों से बचना चाहता था। बगल के कमरे या [illegible] में मिल्ड्रेड बर्तन खड़काती या उसकी बच्ची ऊँ आँ करती तो फिलिप को घर में कुछ कम अकेला लगता। लेकिन उसके मन में मिल्ड्रेड को लेकर कोई शारीरिक आकर्षण नहीं बचा था। वह उससे केवल काम पड़ने पर ही बोलता।

"सुबह नौ बजे मेरी क्लास है। क्या सवा आठ बजे तक नाश्ता तैयार हो जायेगा?" वह पूछता।

"हाँ, जरूर।"

"तुम्हारा कमरा उस तरफ है। उम्मीद है तुम्हें पसन्द आएगा।"

"तुम अभी पढ़ोगे।"

"हाँ मैं अक्सर ग्यारह, साढ़े ग्यारह बजे सोता हूँ।"

"अच्छा नमस्ते।"

"नमस्ते।"

मिल्ड्रेड अपने कमरे में चली जाती। फिलिप देर रात तक पढ़ता रहता।

दो-चार दिन में मिल्ड्रेड ने सफाई कर घर चमका दिया। फिलिप ने देखा, "अरे तुमने तो बड़ी मेहनत कर डाली।"

फिलिप ने मिल्ड्रेड को ताकत की दवा लाकर दी क्योंकि वह बड़ी कमजोर थी और काम करने से उसकी साँस फूल जाती। अभी भी उसे सजने-सँवरने का शौक था। उसका दिल रखने के लिए फिलिप ने उसे एक नयी फ्रॉक और हैट ले दिया। फिलिप को लगता था कि इतना सब करना उसका कर्तव्य था।

पर मिल्ड्रेड के इरादे दूसरे थे। जब फिलिप की ओर से उसे कोई प्रोत्साहन नहीं मिला, एक रोज जब फिलिप अस्पताल गया हुआ था उसने क्रोध में उसके घर का कुल सामान भयंकर तोड़ फोड़कर नष्ट कर दिया और बच्ची को लेकर खुद कहीं चली गयी। फिलिप ने अस्पताल से लौटकर यह दृश्य देखा तो दंग रह गया। उसकी दुर्लभ तस्वीरें, फरनीचर,

किताबें, बर्तन सब कुछ तो वह नष्ट कर गयी थी। सिर्फ कपड़े साबुत बच गये थे, शायद उसकी नजर उन पर नहीं पड़ी।

मुसीबतें जब आती हैं तो एक साथ आती हैं। फिलिप ने अपना काफी पैसा शेयरों में लगा रखा था। पर युद्ध काल में इंग्लैंड की अर्थ-व्यवस्था वैसे ही डाँवाडोल थी। लिहाजा शेयरों के दाम गिरते गये और फिलिप को भारी घाटा हो गया। फिलिप इस धक्के के लिए तैयार नहीं था। सारे भुगतान करने के बाद उसने पाया उसके पास सिर्फ सात पौंड बैंक के खाते में बचे। फिलिप ने विलियम कैरी को पत्र लिखा कि वह उसे डेढ़ सौ पौंड उधार दे दे ताकि उसकी पढ़ाई में व्यवधान न पड़े। पर विलियम कैरी ने उसे एक भी पैसा देने से इंकार कर दिया। ऊपर से यह भी लिखा कि अब फिलिप को होश आ जायेगा कि पैसा क्या होता है।

फिलिप ने एक बार फिर उन्हें पत्र लिखा। वह पढ़ाई बीच में नहीं छोड़ना चाहता था। पर उधर से निराशा ही हाथ लगी।

जल्दी ही फिलिप की वह हालत हो गयी कि उसे अपने कीमती कपड़े गिरवी रखने पड़े। उसने अपना खाने-पीने का खर्च काफी घटा दिया। फिर भी गुजर करनी मुश्किल हो गयी।

यों तो फिलिप हमेशा तंगदस्त रहा था पर उसने कभी यह नहीं सोचा था कि उसे खाने-पीने में भी कटौती करने की नौबत आ सकती है। अगर उसकी पढ़ाई पूरी हो चुकी होती तो विकलांगता के बावजूद वह डॉक्टरी सेवा में ले लिया जाता। आजकल देश में डॉक्टरों की बड़ी कमी थी। पर वह तो अभी मेडिकल कॉलेज के चौथे वर्ष में था।

एकाध बार फिलिप का मन आत्महत्या करने का हुआ। पर उसके दिमाग ने इस भावना को धकेल दिया। कमरे का किराया भी चढ़ता चला जा रहा था। फिलिप काम की तलाश में दिन भर भटकता और रात हाइड पार्क की किसी बेंच पर गुजार देता। अब उसे एहसास हुआ कि जिन लोगों के सिर पर छत नहीं होती, उन्हें कैसा लगता है।

''जब तक विलियम कैरी मर नहीं जाते, मुझे ऐसे ही रहना होगा,''

फिलिप ने सोचा।

फिलिप ने अन्दाज लगाया। उसके ताऊ सत्तर से तो ऊपर के होंगे। फिर उन्हें दमा भी था। पर इसका मतलब यह तो नहीं कि वे मर सकते हैं। फिलिप ने कई दमे के रोगियों को बहुत लम्बी उम्र पाते देखा था।

जहाँ-जहाँ भी फिलिप काम के लिए गया, अनुभव के अभाव में उसे नहीं रखा गया। इस बीच उसकी भूख-प्यास भी मर गयी।

रविवार को फिलिप अथेलनी के यहाँ गया।

"कहाँ थे तुम?" अथेलनी ने उसकी ओर घूरा।

"खाना तैयार होने में दस मिनट हैं, तब तक तुम दूध और अंडा ले लो फिलिप।" मिसेज अथेलनी ने कहा।

सैली अन्दर आकर मेज ठीक करने लगी।

"तुम तो पहले से बहुत मोटी हो गयी हो।" फिलिप ने सैली से कहा।

"और तुम सूखते चले जा रहे हो।" सैली ने फट से जवाब दिया।

फिलिप का चेहरा लाल हो गया।

अथेलनी बोला, "इतनी बक-बक करने की क्या तुक है सैली। चलो जाकर खाना लगाओ।"

फिलिप ने सोचा था वह ठूँस-ठूँस कर खाएगा लेकिन वह कुछ खा ही नहीं पाया। उसे यह सोच कर बेहद थकान आ रही थी कि खाने के बाद वह फिर इस तूफानी रात में बाहर निकल पड़ेगा। वह मकान मालकिन से मुँह छुपाता फिर रहा था।

जब वे दोनों अकेले रह गये अथेलनी ने फिलिप को बताया कि वह उसके मकान पर गया था।

फिलिप संकोच से जड़ हो गया। इसका मतलब अथेलनी को उसकी स्थिति का थोड़ा बहुत अनुमान लग चुका होगा।

"तुम्हारी मकानदारिन ने बताया कि अभी पिछले महीने का किराया भी तुमने नहीं चुकाया। इस महीने तुम ठिकाना छोड़ कर आखिर कहाँ भटक रहे हो?"

"कहीं नहीं।"

"फिर भी।"

"देखो, बैटी और मैंने इससे भी बुरा समय देखा है और हमारे सिर पर तो बच्चों का भी बोझ था। तुम यहाँ क्यों नहीं आ गये?"

अथेलनी की आत्मीयता से फिलिप का दिल भर आया। उसे असीम थकान महसूस हुई। आँख मूँदकर उसने अथेलनी को इन पिछले दिनों की अपनी पूरी रामकहानी सुना डाली।

"ठीक है जो हुआ सो हुआ। अब जब तक कहीं ठिकाना नहीं बैठता, तुम्हें यहीं रहना होगा।" अथेलनी ने कहा। साथ ही उसने पत्नी को आवाज लगायी, "बैटी, मिस्टर कैरी हमारे घर ही रहेंगे।"

"यह तो बढ़िया बात है। मैं अभी जाकर बिस्तर बिछा देती हूँ।" बैटी ने उत्साह से कहा।

लिन ऐंड सेडले कम्पनी में जहाँ अथेलनी काम करता था, आजकल कर्मचारियों की कमी थी। कई कर्मचारी देश प्रेम से प्रेरित होकर फौज में भरती हो गये थे। यह एक बहुत बड़ी कम्पनी थी जहाँ हर प्रकार का रेडीमेड वस्त्र तैयार होता और बिकता था। कम्पनी की ओर से कर्मचारियों के रहने खाने की भी व्यवस्था थी। अथेलनी के प्रयत्न से फिलिप की ड्यूटी वस्त्र विभाग की सीढ़ियों के ऊपर खड़े होकर ग्राहकों का दिशा निर्देश करने की थी। उस जैसे दिशा निर्देशक और भी थे पर वे पैर से लाचार नहीं थे। फिर भी उन सबके पैर रात में बेहद दु:ख जाते और अक्सर उन्हें ठंडे पानी की बाल्टी में पैर डुबाये देखा जा सकता था। तरह-तरह के लोग थे ये। इनमें सेल्समैन थे, सेल्सगर्ल्स थीं, मार्ग-दर्शक, चौकीदार और चपरासी भी थे। इन सभी कर्मचारियों के रहने का प्रबन्ध हैरिंग्टन स्ट्रीट पर एक बड़ी इमारत में था। काम के पहले दिन हैरिस नाम का एक सहयोगी कर्मचारी फिलिप को अपने साथ ले गया। उसके कमरे में एक बिस्तर आजकल खाली था। इस इमारत में सभी कमरों में बड़ा अँधेरा था। पहले यहाँ चमड़े का काम होता था इसलिए एक अजब दमघोंटू गन्ध इस इमारत के हर कमरे में बसी हुई थी। खिड़कियों की जगह आलमारियाँ ठुँकी हुई थीं। हवा और रोशनी

के लिए बहुत ऊँचाई पर बने छोटे-छोटे रोशनदान थे, बस। फिलिप को लगा वह यहाँ सो नहीं सकेगा। हैरिस ने उसे कॉमन बैठक कमरा भी दिखाया। उस कमरे में एक पुराना पियानो रखा था जिसका की-बोर्ड सड़े हुए दाँतों की तरह दिख रहा था। इधर-उधर कुछ पुरानी पत्रिकाएँ पड़ी थीं।

फिलिप का बिस्तर सबसे ऊपरी मंजिलवाले कमरे में था। कमरे में कुल छः बिस्तर थे, हर बिस्तर के नीचे एक ट्रंक। एक कोने में शीशा लटका हुआ था। हैरिस ने फिलिप को गुसलखाना भी दिखाया। उसमें लाइन से आठ वॉश बेसिन लगी थीं। सारे कर्मचारी यहीं नहाते-धोते थे। रात का खाना पास के एक ढाबे से आता था। दो पैसे प्लेट में पावरोटी और गोश्त का टुकड़ा मिल जाता।

''टन टन टन'' सुबह ठीक सात बजे घंटी की आवाज से फिलिप की नींद खुलती। सभी लोग जल्दी-जल्दी पौने आठ तक तैयार होते। नाश्ता ठीक आठ बजे दुकान पर ही मिलता। अगर कर्मचारियों को एक भी मिनट की देर हो जाती तो उन्हें नाश्ता नहीं दिया जाता। साथ ही एक बार दुकान के अन्दर जाने पर उन्हें कुछ भी खरीदने या खाने के लिए बाहर निकलने की इजाजत नहीं थी। इसलिए कई बार तो देर होने पर कर्मचारी काम पर आते समय बाहर से खरीदकर 'बन' जेबों में भर लेते। पर इस सबमें पैसे खर्च होते इसलिए ज्यादातर कर्मचारी बिना कुछ खाये दुपहर तक काम चलाते। फिलिप जल्दी-जल्दी नाश्ता निगलता और ठीक साढ़े आठ बजे अपना काम शुरू कर देता।

''मैडम दायें जायें फिर बायें हाथ पर दूसरा।'' यह वाक्य पूरे दिन फिलिप यन्त्रचालित-सा बोलता रहता। चित्रकला सीखने के नाते फिलिप को रंग संयोजन की अच्छी पहचान थी। एकाध बार उसने दुकान की शो विंडो सजायी तो उसके काम को देख कर विभागीय अधिकारी खुश हो गये। उन्होंने उसे तरक्की का आश्वासन दिया।

लेकिन फिलिप को इस काम में सन्तोष और उपलब्धि नहीं मिलती थी। उसका हृदय बार-बार पुकार उठता, 'इस सब का प्रयोजन क्या है?'

उसे अपना समूचा जीवन ही निष्फल लगने लगा। उससे कम प्रतिभावाले लोग दुनिया में सफल थे और वह हर क्षेत्र में फिसड्डी रहा। मनुष्य क्यों जीता है, किसलिए, जीवन का क्या अर्थ है? फिलिप अपने मन में इन प्रश्नों से टकराता रहता। अन्तत: उसे लगा वह अनास्थावादी होता जा रहा है। उसने नियति के हाथों अपनी पतवार सौंप दी। तरक्की का रास्ता इतना काँटों भरा था कि फिलिप को लगा कि मनुष्य जीवन का औसत सपना कहीं ज्यादा अच्छा है। जन्म, शादी, बच्चे, रोजी-रोटी और अन्त में मृत्यु शायद अब तक का सबसे आसान और सफल रास्ता यही है। इस प्रकार के चिन्तन के बाद फिलिप का मन हल्का हो जाता। उसे लगता अब वह निजी सुख-दुख से परे जीवन के बारे में सोच सकता है।

कभी-कभी फिलिप अपनी डाक देखने अस्पताल जाता। सर्दी बीत जाने के बाद के दिन थे। एक दिन उसे अपने अंकल की चिट्ठी मिली कि वे अभी-अभी बीमारी से उठे हैं और फिलिप एक बार आकर उनसे मिल जाये।

फिलिप की पहली प्रतिक्रिया आक्रोश की हुई। क्या इस बीच अंकल ने कभी फिक्र की कि फिलिप किस हाल में है। वह भूखा भी मर जाता तो यह बूढ़ा परवाह न करता। फिर फिलिप ने सोचा चलो घर जाकर एक बार ताऊजी से मिल ही लिया जाय। कम्पनी के कायदे के अनुसार हर कर्मचारी को साल में दो सप्ताह की छुट्टी मिलती थी। इस सितम्बर में अथेलनी परिवार भी छुट्टी मनाने केन्ट जा रहा था। फिलिप के पास समय बिताने का कोई ठिकाना नहीं था।

विलियम कैरी को देखकर फिलिप हैरान रह गया। उसकी कमर झुक गयी थी, शरीर की त्वचा पीली पड़ गयी थी और वह बहुत धीमे चलता था। बीमारी के कारण उसके चेहरे पर बेतरतीब दाढ़ी भी उग आयी थी।

लेकिन भोजन के दौरान फिलिप ने देखा कि वृद्ध कैरी की भूख अभी भी पहले जैसी थी, बल्कि और ज्यादा। उसने डटकर खाया। फिर

उसने अपनी दवाओं का पर्चा फिलिप को दिखाया। ये ज्यादातर नींद की गोलियाँ थीं। विलियम कैरी लगातार अपने स्वास्थ्य के बारे में बात करता रहा। फिर वह खर्च का रोना रोने लगा। डॉक्टर की फीस, केमिस्ट का बिल और महँगाई—यह सब सुनकर फिलिप ऊब गया। फिलिप ने पाया कि उसके वृद्ध ताऊ के लिए सिर्फ दो चीजें संसार में बची थीं—एक भोजन, दूसरी पैसा।

विलियम कैरी बार-बार फिलिप से पूछता, ''क्यों तुम्हें क्या लगता है मैं अस्सी तक जी लूँगा या नहीं। मेरी माँ तो चौरासी साल तक जी थी।''

विलियम कैरी को पूजा-पाठ में अब सीमित रुचि रह गयी थी। उसे दृढ़ विश्वास था कि वह मर कर स्वर्ग में ही जाएगा। अब तक विलियम कैरी अनगिनत लोगों की अन्तिम घड़ी में धर्मग्रन्थों का पाठ कर चुका था लेकिन खुद अपने लिए ऐसा करना उसके बस की बात नहीं थी। बाइबिल उसके सिरहाने सारे दिन अनछुई पड़ी रहती। विलियम कैरी की दशा उस डॉक्टर जैसी थी जो अपना इलाज खुद नहीं कर सकता। फिलिप को लगा उसके अंकल आत्मसाक्षात्कार से घबरा रहे हैं। आजकल वे जिन्दगी को केवल शारीरिक स्तर पर जी रहे थे। उनकी इच्छा होती कोई सारा दिन उनसे यही कहता रहे ''अब तो आपकी तबियत काफी ठीक लग रही है।''

डॉ. विग्रैम के आने पर अंकल बड़े जोश में आ जाते। वे बड़े मनोयोग से अपनी जाँच करवाते और अपनी तन्दुरुस्ती के बारे में आश्वस्त हो जाते। डॉ. विग्रैम मरीज के साथ बहस में पड़ना ठीक नहीं समझते इसलिए हर बार एक ही जवाब दिया करते ''मरीज का हाल जहाँ तक है अच्छा है।'' कई बार फिलिप की जुबान पर यह सवाल आते-आते रह गया कि विलियम कैरी की आयु के कितने दिन शेष रहे हैं। हर बार उसे लगा कि डॉक्टर से ऐसा सवाल करना बड़ा अशोभनीय हो जाएगा। घुमा फिरा कर उसने एक दिन पूछा, ''कोई गम्भीर गड़बड़ तो इनके स्वास्थ्य में नहीं है डॉक्टर!''

''लगता तो नहीं। ऐसा है अगर यह गर्मियाँ ठीक से निकाल ले जायें तो सर्दी में कोई दिक्कत न होगी और अगर सर्दियाँ ठीक से निकाल ले जायें तो गर्मी में कोई दिक्कत न होगी।'' डॉक्टर विग्रैम ने कहा।

पन्द्रह दिन बाद फिलिप वापस लन्दन लौट आया। फिर वस्त्र विभाग में वही काम शुरू हो गया, ''दायें जाइए मैडम, बायें मुड़िए।'' बीच-बीच में फिलिप को लगता कि अभी-अभी कोई आयेगा और उसके हाथ में तार थमा देगा, ''विलियम कैरी का निधन हो गया, जल्दी आओ।''

यह उसका वहम ही था।

कई बार फिलिप अपनी अधूरी पढ़ाई पूरी करने के बारे में सोचता और उसके बाद के जीवन की रूपरेखा बनाता। उसका स्पेन जाने का बहुत मन्न था। वह स्पेन के बारे में किताबें ला-लाकर पढ़ता। फिलिप ने स्पेनिश भाषा भी सीखनी शुरू कर दी। हफ्ते में एक दिन अथेलनी उसे स्पेनिश पढ़ाता। मिसेज अथेलनी उन दोनों की इस खब्त का मजाक उड़ातीं, ''तुम और तुम्हारी स्पेनिश भाषा। अरे कोई मतलब का काम क्यों नहीं करते?''

लेकिन सैली उन दोनों के पास खड़ी होकर बड़ी गम्भीरता से यह सब सुनती। उसे स्पैनिश नहीं आती थी इसलिए उसे यह बड़ी बात लगती कि उसके पिता और फिलिप स्पैनिश में बातचीत कर रहे हैं। सैली के ऊपर अपने पिता का बहुत प्रभाव था। फिलिप के बारे में भी वह अपने पिता की राय के मुताबिक ही बोलती।

''पापा तो फिलिप को बहुत मानते हैं'' वह अपने भाई-बहनों से कहती।

मिसेज अथेलनी लगातार ज़िम्मेदारियाँ निभाते-निभाते थक चली थीं। शाम को अक्सर उनकी कमर दर्द करने लगती। उन्हें लगता कि अगर उन्हें काम में हाथ बटाने के लिए एक नौकरानी रखने की सुविधा हो जाय तो उनके सारे दुख दूर हो जायें। फिर वे सुबह चैन से सात बजे तक सोया करें। अथेलनी कहता, ''यह ठीक है हमारी ज़िन्दगी में बहुत उतार-चढ़ाव रहे हैं पर कुल मिलाकर अच्छी ही कटी है उम्र।''

एक दिन फिलिप को मिल्ड्रेड का छोटा-सा खत मिला।

"प्रिय फिल,

एक मिनट के लिए आ जाओ। मैं भयंकर मुसीबत में हूँ। पैसे की बात नहीं है।

—मिल्ड्रेड

फिलिप ने खत फाड़ डाला, "भाड़ में जाये मिल्ड्रेड!"

लेकिन रात में उसे ठीक से नींद नहीं आयी। उसे लगा जरूर मिल्ड्रेड किसी यातना से गुजर रही है। अन्यथा वह कभी फिलिप को याद न करती। उसे लगा अपनी बेचैनी दूर करने के लिए मिल्ड्रेड से मिल लेना जरूरी होगा।

मिल्ड्रेड एक बेहद गन्दी इमारत में रह रही थी। उसके भद्दे कमरे को देखकर कोई भी बता सकता था कि मिल्ड्रेड वापस उसी आदिम पेशे में पहुँच गयी है जिसमें से फिलिप ने उसे निकालने का प्रयत्न किया था।

"तुम्हारा गला बहुत खराब है।"

"हाँ।"

"पता चला तुम हॉस्पिटल में नहीं हो।"

"हाँ। पढ़ाई छोड़नी पड़ गयी।"

"थोड़ी जानकारी तो अभी होगी। जरा देखकर बताना।"

"क्या हुआ है?"

"मेरे शरीर पर फोड़े-फुन्सी निकल आये हैं जो ठीक ही नहीं हो रहे।"

फिलिप ने मिल्ड्रेड का गला और आँखें देखकर पहचान लिया कि वह किसी भयानक गुप्त रोग की चपेट में आ चुकी है।

"बच्ची कहाँ है?"

"मर गयी।"

"ओह!"

फिलिप कुछ रोज मिल्ड्रेड को देखने जाता रहा। यथाशक्ति उसने

उसकी आर्थिक मदद भी की। लेकिन जरा-सा ठीक होते ही मिल्ड्रेड ने फिर वही ढर्रा अपना लिया। ऊब कर फिलिप ने उसे त्याग दिया।

क्रिसमस पर फिलिप एक बार फिर ब्लैकस्टेबल गया।

विलियम कैरी इस एक वर्ष के अन्दर और ज्यादा वृद्ध हो गया था। उसकी देह सिकुड़ कर सूख गयी थी। वह छड़ी के बगैर चल नहीं सकता था। खाते हुए उसके हाथ काँपते। उसकी यह दशा देखकर फिलिप का मन हुआ वह अंकल से पूछे "अंकल अभी भी आप अमरता में विश्वास करते हैं?"

विलियम कैरी के निद्रामग्न मुख पर मनुष्य व्यक्तित्व का कोई चिह्न शेष नहीं था। फिलिप ने अन्दाज लगाना चाहा कि विलियम कैरी कब तक जीवित रह सकेगा। उसने पाया जीवन का कोई गणित नहीं होता है। मिस्टर कैरी अभी भी अपने स्वास्थ्य को लेकर सबकी नाक में दम किये थे। उनके सिरहाने एक घंटी लगी हुई थी। थोड़ी-थोड़ी देर में वे घंटी दबा देते। उनकी सेविका मिसेज फोस्टर जब आतीं वे कहते, "कुछ नहीं, बस यह देखने के लिए घंटी बजायी थी कि तुम आस-पास हो या नहीं।"

फिलिप ने कहा, "मिसेज फोस्टर थक जाती होंगी, उन्हें बड़ी दौड़भाग रहती है।"

"सब बकवास है", अंकल बोले, "यह तो घोड़ी की तरह तगड़ी है।"

फिलिप के लिए यह अजीब बात थी कि उम्र भर लोगों को आत्मा की अमरता का पाठ पढ़ानेवाले अंकल कैरी मृत्यु के भय से बुरी तरह आतंकित थे। शायद वह अमरता के द्वार तक नहीं पहुँचना चाहते थे। क्रिसमस के बाद फिलिप काम पर चला गया।

जुलाई में एक बार फिर फिलिप को ब्लैकस्टेबल जाना पड़ा।

अंकल बिस्तर पकड़ चुके थे। उनकी आँखों में दो बूँद आँसू आ गये "फिलिप मैं जा रहा हूँ।"

"नहीं अंकल अभी तो आप बरसों जियेंगे।" फिलिप ने कहा।

''मिस्टर सिमोन्ड को बुला दो। मैं कम्यूनियन में अपने पाप स्वीकार करना चाहता हूँ।''

कम्यूनियन के बाद विलियम कैरी का मन हल्का हो गया।

फिलिप ने सेविका के साथ अंकल की अन्तिम यात्रा की तैयारी कर ली। फिर वह सिरहाने बैठा मृत्यु की धीमी प्रक्रिया देखता रहा।

कभी-कभी विलियम के मुँह से अस्पष्ट आवाज निकलती, कभी वह एकदम निश्चेष्ट हो जाता। अचानक एक खड़खड़ाहट-सी उसके गले से निकली, पूरी देह काँपी और विलियम के प्राण निकल गये।

वकील ने बताया कि वसीयतनामे के अनुसार विलियम कैरी की समस्त सम्पत्ति का वारिस उसका भतीजा फिलिप है। फिलिप ने अचल सम्पत्ति नीलाम कर दी और इस धन से अपनी अधूरी पढ़ाई पूरी करने का इरादा किया। उसके तीन कोर्स शेष थे। सबसे पहले फिलिप को प्रसूति विभाग का काम मिला। उसे दिन में कम से कम तीन केस निपटाने होते। फिलिप का हाथ अच्छा था। वह दयालु था और स्नेही। कई बार प्रसूति कार्य के लिए उसे मरीज के घर भी जाना पड़ता। घनी गन्दी बस्तियों में वह जीवन पैदा होते, पलते देखता और चकित हो जाता। ऐसे घरों में नवप्रसूता को दस दिन का आराम भी नसीब न होता। इन घरों की दशा यह थी कि काम पर जाओ तो चूल्हा जले।

फिलिप को महसूस होता कि इन गरीबों की मदद करनेवाले लोगों की गलती यह है कि वे उस व्यवस्था को नहीं बदलते जिसके अन्तर्गत समाज में कुछ लोग इतने गरीब हैं।

अब तक फिलिप ने यही सुना था कि गरीब वर्ग में बड़ा एका होता है। सब एक-दूसरे की मदद के लिए तैयार रहते हैं। पर ऐसी बस्तियों में काम करने पर उसने पाया यह धारणा गलत थी। किसी को किसी में दिलचस्पी नहीं थी और न ही अवकाश। इस वर्ग को अमीर वर्ग से कोई ईर्ष्या नहीं थी। क्योंकि उस वर्ग के बारे में ये कुछ जानते भी नहीं थे। इनकी ईर्ष्या का विषय था मध्यवर्ग क्योंकि उसकी खुशहाली इनकी समझ में आती थी। ये मध्यवर्ग को अपना शिकार समझ कर उनसे

व्यवहार करते।

इतवार को एक पादरी आकर इन्हें धार्मिक प्रवचन देता। बस्ती के लोग चुपचाप एक बेरुखी से उसे सुन लेते। लेकिन जब जिले की हैल्थ विजिटर इनके घरों में आती ये लोग अपनी नफरत और गुस्सा बिल्कुल स्पष्ट कर देते। इन्हें लगता हैल्थ विजिटर इन्हें जंगली और इनके घरों को गन्दा मान रही है।

फिलिप ने पाया कि इस निम्न वर्ग के जीवन में दुख, बिछोह और मृत्यु को इतनी बड़ी विपत्ति नहीं समझा जाता जितनी कि बेरोजगारी को। खाली बैठने से बड़ी मुसीबत और कोई नहीं थी।

अथेलनी परिवार फिलिप के भाग्य पर बड़ा खुश था। फिलिप ने सभी को छोटे-छोटे उपहार दिये। सैली को उसने सोने की जंजीर दी। सैली इस बीच बड़ी हो गयी थी। वह एक दर्जी की दुकान में काम सीख रही थी। जब फिलिप कमरे में बैठकर कुछ पढ़ता रहता, सैली अपनी सिलाई का काम लेकर वहीं आ बैठती। उन दोनों में बातें तो कम होतीं पर एक मौन सम्प्रेषण लगातार रहता। दुकान पर सूखी, अस्वस्थ सेल्सगर्ल्स को देखने के बाद सैली जैसी स्वस्थ, सुन्दर और समझदार लड़की को देखने का अपना ही सुख था।

अगस्त के आरम्भ में फिलिप ने मेडिकल की अपनी पढ़ाई पूरी कर ली। उसे रॉयल कालेज ऑफ सर्जन की डिग्री प्राप्त हो गयी। अब वह पूरी तरह प्रशिक्षित चिकित्सक था।

अस्पताल के सेक्रेटरी ने फिलिप को तुरन्त एक अस्थायी काम भी दिला दिया। डॉरसेटशायर में अस्पताल की ओर से मछुआ-बस्ती में एक चिकित्सक 'डॉ. साउथ' काम करते थे। उन्हें एक सहायक चाहिए था।

फिलिप डॉरसेटशायर चला गया। यों तो डॉ. साउथ अजीब प्रकृति के बूढ़े व्यक्ति थे पर फिलिप की कार्य-कुशलता से वे प्रभावित हुए बिना न रह सके। इस एक माह में फिलिप का डॉक्टरी अनुभव और व्यापक हुआ। फिलिप का काम करने का तरीका बड़ा ही मौलिक, शान्त और सभ्य था। डॉ. साउथ उसके काम में लाख दोष ढूँढ़ने की कोशिश करते

पर कामयाब न होते। अब तक जितने नौजवान डॉक्टरों ने उनके निर्देश में काम किया था वे किसी से भी प्रसन्न न हुए थे। उनकी शिकायत थी कि गरीब मछुआरों को कोई बहुत महँगी दवाएँ लिखकर देता था तो कोई बहुत बेअसर। कोई अपने को बहुत बड़ा स्पेशलिस्ट समझता तो कोई मरीजों को हिकारत से देखता। ये सब सहायक डॉ. साउथ के प्रति उपेक्षा और आलोचना का भाव रखते। फिलिप इन सबसे अलग था। उसके मन में डॉ. साउथ के लिए आदर और स्नेह था।

यह काम सिर्फ चार हफ्ते का था जो पलक झपकते बीत चले। आखिरी दिनों की बात है एक शाम डॉ. साउथ और फिलिप डिस्पैंसरी में दवाएँ तैयार कर रहे थे कि एक छोटी-सी लड़की क्लीनिक में आयी।

''मेहरबानी करके डाक्टर साहब आप जल्दी से आई.बी. लेन में मिसेज फ्लेचर के यहाँ चलिए।''

''क्यों क्या हुआ?'' डाक्टर साउथ ने पूछा।

लड़की ने डॉ. साउथ की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया, वह फिलिप से कहने लगी, ''प्लीज जल्दी चलिए न।'' डॉ. साउथ ने बुरा नहीं माना सभी मरीज फिलिप पर भरोसा करते थे। चार हफ्ते कब बीत गये फिलिप को पता ही न चला। चिट्ठी में उसने थॉर्प अथेलनी को इस काम के बारे में बताया। अथेलनी ने उसे केन्ट आने का निमन्त्रण दिया।

वहाँ अथेलनी-परिवार एक अजीब लेकिन मज़ेदार तरीके से छुट्टी बिता रहा था। केन्ट में शराब व्यवसाय के लिए व्यापक स्तर पर हॉप के बीजों की खेती होती थी। इनसे शराब में तलखी आती थी। अथेलनी परिवार सारा दिन खेतों में बीज इकट्ठे करता। फिलिप ने भी साथ में यह काम किया। वहीं खेत में झोंपड़ी बनाकर वे लोग रह रहे थे। इस तरह के ग्रामीण वातावरण में फिलिप को बड़ा सुकून मिला। ये सीधे-सादे लोग थे, मेहनत में विश्वास रखते थे और फिजूल की दार्शनिकता से इनका कोई वास्ता नहीं था। लन्दन के घिचपिच मकानों में हवा और प्रकाश जैसी नियामतें पाना कठिन था पर यहाँ प्रकृति का समस्त धन उन्हें उपलब्ध था यहाँ तक कि सोने के लिए गद्दे भी यहाँ घासफूस

उसे अपने आप पर गुस्सा आ रहा था। कितना बेवकूफ आदमी था वह। वह खुद मुसीबतें बुला लाता था। इस एक खबर से उसे लगा भविष्य की सभी योजनाएँ धराशायी हो गयी हैं। वह छुट्टियों में स्पेन घूमना चाहता था। वह कविता पढ़ना चाहता था, वह पेंटिंग करना चाहता था। दरअसल फिलिप लगातार भविष्य में जीने वाला व्यक्ति था।

पहले फिलिप ने सोचना चाहा कि जरूर सैली से दिन गिनने में कोई गड़बड़ हुई है। पर फिर उसे लगा यह सम्भव नहीं है। वह चाहता तो इस सारे झमेले की जिम्मेदारी लेने से इंकार कर सकता था पर यह उसके स्वभाव के विरुद्ध था। फिर अथेलनी परिवार ने हमेशा उसे प्यार और सहारा दिया था। उसने तय किया वह सैली से तुरन्त शादी करेगा और सपत्नीक वापस जाकर डॉ. साउथ के क्लीनिक पर नौकरी कर लेगा। वहाँ मछुआ बस्ती में सैली के मन में अपनी स्थिति को लेकर कोई हीन भाव भी नहीं उठेगा। आखिरकार इस औसत सपने में सुख भी था कि शादी करो, बच्चे पैदा करो, नौकरी करो और फिर एक दिन मर जाओ। फिलिप ने तय किया वह अपने भविष्य के सारे सपने सैली को उपहार स्वरूप दे डालेगा। उसने सैली से शादी का प्रस्ताव करने का निर्णय ले लिया।

शनिवार को फिलिप और सैली नेशनल गैलरी में मिलने वाले थे। सैली को दुकान से सीधे वहीं आना था। इस बीच फिलिप को डॉ. साउथ से नियुक्ति पत्र भी मिल गया।

उतावली में फिलिप जरा जल्दी पहुँच गया।

सैली समय पर आयी। उसके आते ही जैसे जीवन की छटा छा गयी।

''कैसी हो?'' फिलिप ने धड़कते हृदय से पूछा।

''ठीक हूँ, मेरा शक बेकार था।''

''हैं?''

''क्यों क्या तुम्हें खुशी नहीं हुई?''

फिलिप के हृदय में अजीब सी प्रतिक्रिया हुई। उसे विश्वास था कि

सैली की आशंका सच है। एक बार फिर उसे अपने सारे इरादे ढहते नजर आये। अब तो वह आजाद था। उस पर कोई जिम्मेदारी नहीं थी। पर उसका दिल डूबने लगा। उसे अपना भविष्य अर्थहीन दिखाई दिया। इतने वर्ष उसने संघर्ष और प्रयोग किया, अब वह एक पड़ाव चाहता था।

''मैंने सोचा था तुम यह सुनकर खूब खुश होगे।'' सैली ने कहा।

''पता नहीं।''

''अजीब हो तुम भी।''

फिलिप को लगा स्पेन जाना, बर्मा जाना, नये-नये सफर करना सब का सब बेमानी है। अब उसे एक साथी चाहिए, घर चाहिए और प्रेम। यह सब उसकी गिरफ्त में आकर छूटता जा रहा है। इसे पकड़ना ही होगा। सुख के आगे समर्पण करने से अच्छी पराजय भला क्या हो सकती है।

''मैं तुमसे पूछने जा रहा था, क्या तुम मेरी पत्नी बनोगी?'' फिलिप ने कहा।

''मैंने भी सोचा था कि तुम यह पूछोगे पर मैं तुम्हारे जीवन में बाधा नहीं बनना चाहती।''

''तुम बाधा नहीं हो।''

''तुम्हारी घुमक्कड़ी का क्या होगा?''

''तुम्हें कैसे पता मैं घूमना चाहता था।''

''तुमने पापा को बताया था।''

''अब इच्छा नहीं होती। मैं तुम्हें छोड़कर, तुमसे दूर अब कुछ नहीं करना चाहता।''

सैली मौन रही। उसने कोई जवाब नहीं दिया।

''बताओ, सैली मुझसे शादी करोगी?''

''अगर तुम चाहो?''

''क्यों, क्या तुम नहीं चाहती?''

''हाँ, मैं भी अपना घर चाहती हूँ।

''घर तो ठीक है पर क्या तुम मुझसे, मुझी से शादी करोगी?''
''और किसी से नहीं करूँगी।''
''इसका मतलब, बात पक्की हुई।''
''ममी पापा हैरान हो जाएँगे, है न!''
''मैं बहुत खुश हूँ।''
''मैं भी।''

❑ ❑ ❑

भारतीय ज्ञानपीठ
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नयी दिल्ली - 110 003
संस्थापक : स्व. साहू शान्तिप्रसाद जैन, स्व. श्रीमती रमा जैन